

डॉ. गैरी मीडर्स, 1 कुरिन्थियों, व्याख्यान 32, 1 कुरिन्थियों 15, परलोक और पुनरुत्थान से संबंधित प्रश्नों पर पॉल का उत्तर।

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी मीडर्स द्वारा 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह व्याख्यान 32, 1 कुरिन्थियों 15, परलोक और पुनरुत्थान से संबंधित प्रश्नों पर पॉल का उत्तर है।

खैर, आज हम 1 कुरिन्थियों के अपने व्याख्यानों को जारी रखते हैं और हम 1 कुरिन्थियों अध्याय 15 को देखने जा रहे हैं।

और इसमें आपका नोटपैड नंबर 16 शामिल है जिसे आपको बाइबिल ई-लर्निंग साइट से प्राप्त करना चाहिए। यह पेज 221 होगा, जो हमारा शुरुआती पेज है। और हमें आज इस अध्याय को कवर करना चाहिए।

यह एक लंबा अध्याय है, लेकिन यह फिर से एक तरह का वर्णनात्मक अध्याय है। और हम इसे अपना लक्ष्य बनाएंगे, कम से कम इस व्याख्यान में, 1 कुरिन्थियों 15 से निपटना। जाहिर है, इन सभी अध्यायों की तरह, बहुत कुछ कहा जा सकता है, लेकिन हम एक संश्लेषण देने की कोशिश कर रहे हैं और ठीक वैसा नहीं कर सकते जैसा एक टिप्पणी कर सकती है।

आप बैठकर यह सुनना नहीं चाहेंगे। मुझे नहीं लगता कि यह बहुत थकाऊ होगा। इसलिए, हम इस तरह का काम आप पर छोड़ देंगे और हम इस अध्याय के बड़े हिस्सों पर नज़र डालेंगे।

जैसा कि हम अध्याय में जाने के लिए तैयार हैं, अध्याय 14 के अंत के बारे में एक बात कहना चाहता हूँ जिस पर मैं फिर से जोर देना चाहता था। 14 के अंत में 33बी से 35 तक महिला के अंश की वैधता का मुद्दा था, लेकिन मैं श्लोक 37 और 38 को दोहराना चाहूँगा। मुझे नहीं पता कि मैंने इस पर पर्याप्त जोर दिया या नहीं।

पॉल की ओर से अपने अधिकार के बारे में यह एक बहुत ही मजबूत बयान है। उसे चुनौती दी गई है, हमने इसे अध्याय 2 में देखा है, कि पॉल के अधिकार, विभिन्न स्तरों पर उसकी शिक्षा की उपयुक्तता और शुद्धता को चुनौती दी गई है। और वह अध्याय 14 की आयत 37 में कहता है, अगर कोई व्यक्ति खुद को भविष्यवक्ता या आध्यात्मिक मानता है, तो यह उन चार स्थानों में से एक है जहाँ आध्यात्मिक व्यक्ति का उल्लेख होगा, खुद को आध्यात्मिक व्यक्ति के रूप में देखें।

जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूँ, उन्हें वह समझे, क्योंकि वे प्रभु की आज्ञाएँ हैं। परन्तु यदि कोई अज्ञानी है, तो अज्ञानी ही रहे। यहाँ बात कई गुना बड़ी है।

सबसे पहले, पौलुस स्पष्ट शब्दों में कह रहा है कि वह परमेश्वर का वचन दे रहा है। इस अंश के अनुसार, उसे इस बात का आत्म-बोध है। और इसके अलावा, अधिक औपचारिक अनुवादों में पद 38 का मुद्दा, लेकिन अगर कोई अज्ञानी है, तो उसे अज्ञानी ही रहने दो।

एनआईवी और कुछ अन्य स्थानों में इसे सुचारू किया गया है। लेकिन मुझे वह पुराना अनुवाद पसंद है। इसका मतलब यह है कि अगर श्रोता पॉल की शिक्षा को आधिकारिक और ईश्वरीय महत्व और गुणवत्ता के रूप में स्वीकार नहीं कर सकते हैं, तो आगे किसी भी बातचीत का कोई आधार नहीं है।

यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धांत है। अगर हम शास्त्रों को ईश्वर के वचन और आधिकारिक के रूप में स्वीकार नहीं कर सकते, तो हम बातचीत करने के लिए कहां जाएंगे? अगर हमारे पास शास्त्रों के अधिकार की ज्ञानमीमांसा नहीं है, तो हम किस ज्ञानमीमांसा की अपील करेंगे? खैर, ईसाई सत्य के संदर्भ में, जाने के लिए कोई जगह नहीं है। बाइबल, आखिरकार, हमारा अधिकार है।

यह हमारा एकमात्र अधिकार है। और इसके बिना, हम भटक रहे हैं। हम ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ हर कोई बाइबल को दरकिनार करना चाहता है।

वे अब इसे आधे समय तक मंच से पढ़ते भी नहीं हैं, मानो दिए गए उपदेश के शब्द शास्त्र के शब्दों से ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं। शास्त्र हर चीज़ का आधार हैं। और पॉल ने अध्याय 14 के अंत में स्पष्ट शब्दों में यह बात कही है।

और जैसे ही वह अध्याय 15 में प्रवेश करता है, वह एक अलग तरह के मुद्दे से निपटता है। वह परेड का उपयोग नहीं करता है। वह किसी तरह के नारे का उपयोग नहीं करता है।

वह कुछ कथनों का उपयोग करता है जो कुरिन्थियों से प्रतीत होते हैं। लेकिन वह अध्याय 15 में वास्तव में एक धार्मिक विचलन से निपट रहा है। अध्याय 15 मसीह के पुनरुत्थान के बारे में है, उन लोगों के पुनरुत्थान के बारे में जिन्होंने उस पर विश्वास किया है, अंतिम समय में।

और यह एक ऐसा धार्मिक सत्य है जिस पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता। वह इसे बहुत ही रोचक तरीके से पेश करता है। यह ऐसा नहीं लगता कि आप इसे बहुत ज़्यादा तीखा कह रहे हैं, लेकिन साथ ही यह पूरी तरह से प्रामाणिक भी है।

और शायद अध्याय 14 के अंत में अध्याय 12 से 14 का समापन भी पुनरुत्थान के तथ्य के बारे में पौलुस की आधिकारिक शिक्षा के लिए मंच तैयार कर रहा है। ऐसा लगता है कि कोरिंथियन समुदाय में कुछ लोग या तो इनकार कर रहे थे या निश्चित रूप से इससे परेशान थे। इसलिए यदि आप अपने पास मौजूद नोट्स में पृष्ठ 221 को देखें, तो हमारे पास यहाँ एक अनुभाग सारांश है।

और मैंने आपको बताया है कि अध्याय 15 की आयतें 1 और 2 अध्याय 15 की आयत 58 के साथ मेल खाती हैं। हाँ, यह एक बहुत ही लंबा अध्याय है क्योंकि पॉल ने इसे कथात्मक प्रारूप में प्रस्तुत किया है। इसलिए मैंने आपको यहाँ पाठ का एक चार्ट दिया है।

मेरा मानना है कि यह अमेरिकन स्टैंडर्ड वर्शन का पाठ है। जहाँ 15.1 कहता है, "भाइयों, मैं तुम्हें बताता हूँ।" और फिर इसके अंत में, यदि तुम उस वचन को दृढ़ता से थामे रहो जो मैंने तुम्हें सुनाया, अन्यथा तुम्हारा विश्वास व्यर्थ हो जाएगा।

और फिर अध्याय 15 के अंत में, जो एक स्वाभाविक सीमा बनाता है, वह कहता है, इसलिए मेरे प्यारे भाइयों। और बेशक, यही भाइयों और बहनों का मतलब है। आप दृढ़ रहें, अविचल रहें, हमेशा प्रभु के काम में बढ़ते रहें।

क्योंकि जितना तुम जानते हो कि प्रभु में तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं है। इसलिए हमें इस अध्याय की शुरुआत और अंत में प्राकृतिक सीमाएँ मिली हैं। बुकएंड की तरह यह हमें बहुत स्पष्ट रूप से बताता है कि हम यहाँ एक इकाई के साथ काम कर रहे हैं।

अब इस अध्याय में, पॉल पुनरुत्थान के तीन प्रमुख पहलुओं से निपटता है। टैल्बर्ट का विशिष्ट संरचनात्मक विश्लेषण इसे सामने लाता है जैसा कि कई अन्य लोग भी करते हैं। लेकिन अध्याय 1 से 15 में, पॉल चर्चा करता है, क्षमा करें, अध्याय 15 की आयत 1 से 11 में, पॉल मसीह के पुनरुत्थान पर चर्चा करता है।

फिर आयत 12 से 34 में, वह कुरिन्थियों से आए कुछ सवालों की ओर मुड़ता है। और उनमें से एक सवाल मृतकों के पुनरुत्थान से संबंधित था, जो उन्होंने पूछे गए दो सवालों के जवाब में पूछा था। फिर अध्याय 35 से अंत तक आयत 58 में, दो अन्य कुरिन्थियों के सवालों के जवाब में पुनरुत्थान शरीर के बारे में बताया गया है।

और हम इन्हें उसी क्रम में देखेंगे। सबसे पहले पौलुस द्वारा मसीह के पुनरुत्थान के बारे में की गई चर्चा है। मसीह का पुनरुत्थान सुसमाचार संदेश का महत्वपूर्ण पहलू है।

अध्याय 15 श्लोक 1 और 2. अब मैंने तुम्हें वही सुसमाचार बताया है जो मैंने तुम्हें सुनाया था, जिसे तुमने ग्रहण भी किया था, जिसके द्वारा तुम स्थिर भी हो, जिसके द्वारा तुम उद्धार भी पाते हो। यदि तुम उस वचन को दृढ़ता से थामे रहो जो मैंने तुम्हें सुनाया था, अन्यथा तुम व्यर्थ विश्वास करोगे। एक बार फिर, हमारे पास सीमा चिह्न हैं।

पद 1 और 2, पद 11 के साथ सीमाबद्ध हैं। पद 11 कहता है, इसलिए, यदि मैं या वे हैं, तो हम ऐसा ही प्रचार करते हैं, हम घोषणा करते हैं। वह घोषणा के साथ शुरू करता है, वह पद 11 में घोषणा के साथ समाप्त होता है।

हैं। शब्द प्रचार करना या घोषणा करना। मैंने तुम्हें वह सुसमाचार बताया जो मैंने घोषित किया था।

यह यूएन्जेलिज़ामाइ है। हमें यूएन्जेलिओन शब्द मिलता है। यूएन्जेलिओन एक ग्रीक शब्द है जिसका अर्थ है सुसमाचार।

इयूएंगेजीज़ामाई, जो इसी से बना है, शुभ समाचार की घोषणा के लिए एक शब्द है। और यह एक ऐसा शब्द बन जाता है जिसका संबंध सुसमाचार की घोषणा से है। प्राप्त शब्द।

हम इस शब्द के बारे में पहले भी बात कर चुके हैं। यह शब्द वस्तुतः परंपरा के स्वागत से जुड़ा एक तकनीकी शब्द है। आधिकारिक शिक्षण का स्वागत।

और जिस पर आप अड़े हुए हैं। अड़े रहना लगभग एक रूपक की तरह है जिसके लिए आप स्थापित हैं। अपनी जमीन पर अड़े रहना ही स्थापित होना है।

जिससे आप भी बच जाते हैं। अगर, और यह एक बहुत ही रोचक छोटा सा बयानबाजी का मुद्दा है। अगर शब्द बयानबाजी के संदर्भ में बहुत प्रसिद्ध है।

जहाँ लेखकों को पता होता है कि उनकी सामग्री दर्शकों को पढ़कर सुनाई जाएगी। और इसलिए इसके परिणामस्वरूप, हमें ये अलंकारिक वाक्यांश मिले हैं। ताकि यह दर्शकों को सोचने के लिए प्रेरित करे।

आप जानते हैं, अगर आप दृढ़ हैं, अगर आप दृढ़ हैं। अगर आप उस वचन को दृढ़ता से थामे रहते हैं जो मैं आपको सुनाता हूँ। यह दर्शकों को चिंतन करने के लिए प्रेरित करता है।

क्या वे उस वचन पर कायम हैं? या वे उस वचन से भटक गए हैं? अब याद करें जब यह कुरिन्थियों के इन समूहों को पढ़ा गया था। ऐसे लोग होंगे जो शायद इस मुद्दे पर भटक गए होंगे। पुनरुत्थान के बारे में इस पर चर्चा होने वाली है।

उन्होंने पौलुस की पिछली शिक्षा को दृढ़ता से नहीं माना है, और इसलिए उनके कान खड़े हो जाएँगे, साथ ही शायद मण्डली के अन्य लोग भी जो उन्हें उस विशेष मुद्दे के लिए फटकार लगा सकते थे। पृष्ठ 222 पर, मसीह के पुनरुत्थान की पुष्टि दो ऐतिहासिक दृष्टिकोणों से की गई है। 15 आयत 3 से 8 दिलचस्प हैं।

ग्रीक में, एक वाक्य है जो NIV जैसी चीज़ों में कटा हुआ होगा, लेकिन वे वास्तव में एक लंबा वाक्य है। श्लोक 3, क्योंकि मैंने सबसे पहले तुम्हें वही दिया जो मुझे मिला था। एक और महत्वपूर्ण शब्द है, कि मसीह हमारे पापों के लिए शास्त्रों के अनुसार मर गया, और उसे दफनाया गया, और उसे उठाया गया, यह एक निष्क्रिय क्रिया है, इसे अक्सर ईश्वरीय निष्क्रिय, ईश्वर की क्रिया के रूप में संदर्भित किया जाता है।

परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से जिलाया; पिता ने पुत्र को जिलाया। शास्त्रों के अनुसार उसे तीसरे दिन जिलाया गया, और वह कैफा के सामने प्रकट हुआ। अब यह वाक्य वास्तव में पद 8 के अंत तक चलता है, लेकिन हम पद 5 में कैफा के साथ रुकने जा रहे हैं। तो, मैंने वितरित किया, यही घोषणा है, मैंने वही वितरित किया जो मुझे प्राप्त हुआ।

अब प्राप्त शब्द हमें एक बार फिर परंपरा से जोड़ता है। यह काफी हद तक स्वीकारोक्ति है। हम स्वीकारोक्ति की प्रकृति के बारे में थोड़ा और बात करेंगे, लेकिन अगर किसी को बपतिस्मा दिया

जा रहा है, तो वे इन मुद्दों पर प्रतिक्रिया दे सकते हैं या अपने बपतिस्मा में भी इन मुद्दों को दोहरा सकते हैं।

वे मानते हैं कि मसीह उनके पापों के लिए मरा। वे मानते हैं कि उसे दफनाया गया, कि वह जी उठा, और कि वह फिर से वापस आ रहा है। ये शुरुआती चर्च की स्वीकारोक्ति वाली बातें हैं।

तो, आप देख सकते हैं कि मैंने यहाँ आपके लिए यह कैसे प्रस्तुत किया, कि मसीह हमारे पापों के लिए शास्त्रों के अनुसार मरा। अब, यह एक दिलचस्प कथन है। शास्त्रों के अनुसार उसे दफनाया गया और तीसरे दिन जी उठाया गया, और वह कैफा को दिखाई दिया, और यह उसके दूसरों को दिखाई देने के बारे में बताता है।

पहली सदी में मसीह के पुनरुत्थान के प्रत्यक्षदर्शी, ऐतिहासिक प्रत्यक्षदर्शी, के बारे में श्लोक 5 से 8 में एक विस्तृत कथन दिया गया है। अब आइए शास्त्रों के अनुसार इस बारे में थोड़ा और सोचें।

अब इसका क्या मतलब है? क्या इसका मतलब पुराने नियम से है? हम उस बिंदु पर हैं जहाँ पॉल और पीटर हैं, और दूसरा पत्रस हमें इस बात की ओर ले जाता है कि वे वास्तव में देख रहे थे कि वे जो कुछ बना रहे थे और समुदाय को प्रदान कर रहे थे वह स्वयं शास्त्र था। पीटर कहते हैं कि पॉल ने दूसरे पत्रस अध्याय 3 में शास्त्रों में लिखा है। इसलिए, प्रेरित समुदाय में यह चेतना बढ़ रही थी कि जो लेखन प्रसारित किए जा रहे थे वे केवल प्रेरितों के अच्छे पत्र नहीं थे, बल्कि वे वास्तव में पुराने नियम के बराबर के शास्त्र थे। पॉल कुछ सुसमाचार साहित्य का उल्लेख कर सकते हैं।

शायद 50 के दशक के मध्य में यह सब बाहर नहीं आया था। निश्चित रूप से, मार्क बाहर था। मैथ्यू प्रसारित हो रहा था, शायद अरामी या हिब्रू में भी, और इस समय तक सुसमाचार की मौखिक परंपराएँ अच्छी तरह से स्थापित हो चुकी थीं।

लेकिन मुझे लगता है कि पॉल इसे पुराने नियम से भी जोड़ रहा होगा, भले ही यह तब तक स्पष्ट नहीं था जब तक कि नए नियम में मसीहाई अंशों में से कुछ को नहीं खोला गया। शास्त्र क्या है? पॉल संभवतः पुराने नियम से प्रभु के सेवक के रूप में जाने जाने वाले मूल भाव का संदर्भ दे रहा है। यशायाह 53 की आयत 5 से 12 तक खास तौर पर।

1 पत्रस अध्याय 2 में प्रभु के सेवक की भूमिका का उल्लेख मसीह के संदर्भ में किया गया है। सुसमाचारों में प्रभु के सेवक के रूप में यीशु के बपतिस्मा का वर्णन किया गया है। और यीशु ने नासरत में अपने उपदेश में भी उस भूमिका को अपने ऊपर लागू किया।

एडवर्ड फज ने एक लेख लिखा जिसमें उन्होंने बताया कि मसीह के बाद पॉल ने प्रभु के सेवक के विचार को चुनौती दी और यहां तक कि मसीह के अनुरूप खुद पर भी इसे लागू किया क्योंकि वह यीशु के संदेश का दूत बना हुआ है। और इसलिए, पॉल ने इस विचार को रखा कि उसे क्या मिला है और यह तथ्य कि यीशु की मृत्यु हो गई है, शास्त्रों के अनुसार, सेवक के कार्य की पूर्ति के रूप में। अब, यह बहुत से लोगों के कानों को अजीब लगा होगा, खासकर यहूदियों के कानों को,

क्योंकि उन्होंने प्रभु के सेवक को इस्राएल राष्ट्र के रूप में संदर्भित किया था, कि एक राष्ट्र के रूप में इस्राएल प्रभु का सेवक था।

लेकिन यशायाह 52 और 53 को आरंभिक चर्च ने मसीहाई पाठ के रूप में देखा और प्रभु के सेवक के रूप में यीशु के भीतर ही इसकी पूर्ति हुई। इसलिए राष्ट्र के प्रतिनिधि होने से लेकर व्यक्ति के प्रतिनिधि होने तक का यह परिवर्तन हुआ। और यह उन लोगों के लिए एक चुनौती होती जो पुराने नियम को समझते थे और मसीह को जानते थे, और अब वे इस तथ्य से जूझ रहे हैं कि उन्हें शास्त्र के इन अंशों में से कुछ के बारे में अपना विचार बदलना होगा।

हमें इस बात से आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए क्योंकि लूका 24 में, यीशु ने इम्माऊस के रास्ते पर शिष्यों के कानों के लिए पुराने नियम के शास्त्रों को खोला और खुद को उन शास्त्रों से अलग किया। क्या आप सिर्फ उस विशेष व्याख्यान को सुनना चाहेंगे? इसके अलावा, न केवल वह शास्त्रों के अनुसार मरा और दफनाया गया, बल्कि तीसरे दिन उसे जीवित भी किया गया। अब, सुसमाचारों में, यह दो तरीकों से कब्र में यीशु को मृत्यु से पुनरुत्थान तक संदर्भित करता है: तीन दिन और तीन रातें, और तीसरे दिन।

यीशु की मृत्यु, दफन और पुनरुत्थान के कालक्रम के अध्ययन में, तीसरा दिन उस सेटिंग में सबसे महत्वपूर्ण वाक्यांश बन जाता है। हेरोल्ड होनर, जो अब दिवंगत हो चुके हैं, डलास सेमिनरी के पूर्व छात्र थे, ने मसीह के जीवन के कालक्रम संबंधी पहलुओं पर एक छोटी सी किताब लिखी थी। मसीह के पुनरुत्थान और पैशन वीक के कालक्रम में उनके उठने के अध्याय के संदर्भ में इस समय आपके लिए इसे पढ़ना अच्छा रहेगा।

तीसरा दिन मसीह के पुनरुत्थान का वर्णन करने के लिए महत्वपूर्ण शब्द बन जाता है, विशेष रूप से शुक्रवार को क्रूस पर चढ़ाए जाने और रविवार की सुबह से पहले या रविवार की सुबह पुनरुत्थान के दृष्टिकोण से। इसलिए, तीसरा दिन एक महत्वपूर्ण वाक्यांश है। 1 कुरिन्थियों 15 में मसीह का पुनरुत्थान प्राप्त परंपरा और वैज्ञानिक इतिहास में दृढ़ता से स्थापित है।

लोगों ने उसे देखा। अब, हाँ, यह एक ऐतिहासिक रिपोर्ट है, लेकिन यह एक वैध ऐतिहासिक रिपोर्ट है जिसे अलग नहीं रखा जाना चाहिए कि पुनरुत्थान के बाद के प्रकटन में और जिस दिन वह स्वर्ग में चढ़ा, उस दिन पुनर्जीवित यीशु के वास्तविक प्रत्यक्षदर्शी थे, जो पेंटेकोस्ट से लगभग 10 दिन पहले हुआ था। सबसे पहले, परंपरा इतिहास, प्राप्त 15: 3-5 का यह मुद्दा प्रारंभिक होमिलोजिया, चर्च में प्रारंभिक स्वीकारोक्ति का हिस्सा लगता है।

इस तरह के कथनों का इस्तेमाल धर्मशिक्षा के रूप में किया जाता था, खास तौर पर उन लोगों के लिए जो नए धर्मांतरित हुए थे और बपतिस्मा ले रहे थे। इनमें से कई कथन नए नियम में पाए जाते हैं। स्वीकारोक्ति कथन आज भी मौजूद हैं।

कुलुस्सियों में कुछ हैं। वे विभिन्न स्थानों पर हैं। इस पर न्यूफेल्ड द्वारा लिखी गई एक अच्छी किताब है जिसका नाम है द अर्ली क्रिश्चियन कन्फेशनस, जो कि न्यू टेस्टामेंट की समरूपता है।

होमिलोजिया एक ग्रीक शब्द है जिसका अर्थ है वही बात कहना, और इसका अनुवाद स्वीकारोक्ति के रूप में किया जाता है। नए नियम में इनका उल्लेख दिलचस्प है क्योंकि यह आपको आरंभिक ईसाइयों की विश्वास प्रणाली के विकास के बारे में एक तरह की अंतर्दृष्टि प्रदान करता है और यह भी बताता है कि उन्होंने बपतिस्मा के माध्यम से और उन बपतिस्माओं के संबंध में किए गए स्वीकारोक्ति के माध्यम से नए धर्मांतरित परिवेश में इसे कैसे शामिल किया। अब, जब आप टिप्पणियाँ पढ़ेंगे, तो वे केरीग्मा के बारे में भी बात करेंगे।

पृष्ठ 222 के नीचे मैंने इसका उल्लेख किया है, केरीग्मा। केरीग्मा एक ग्रीक शब्द है जिसका अर्थ है घोषणा करना। यह यूएनगेलिज़ामी की तरह ही एक और शब्द है जिसका अर्थ है सुसमाचार की घोषणा करना।

खैर, केरीग्मा उस घोषणा का विचार है जो प्रारंभिक चर्च द्वारा दी गई थी। और इसलिए, जब आप टिप्पणियाँ पढ़ते हैं, और वे इसके बारे में बात करते हैं, तो आपको पता चल जाएगा कि यह क्या है। यह मसीह के बारे में प्रारंभिक चर्च का उपदेश है, विशेष रूप से उसकी मृत्यु, दफन और पुनरुत्थान के बारे में।

यह सुसमाचार का संदेश है जिसे उन्होंने घोषित किया। यह वैज्ञानिक इतिहास, पाँचवीं से आठवीं आयतों में, दिखाता है कि मसीह के पुनरुत्थान का पौलुस पर प्रभाव पड़ा। और फिर वह कैफा के सामने प्रकट हुआ, जो निश्चित रूप से पतरस है।

अब, क्षमा करें, मुझे आपके नोट्स में यह बात डालनी चाहिए थी। यीशु के पुनरुत्थान के समय और उनके स्वर्गारोहण के समय के बीच पुनरुत्थान के बाद 11 बार प्रकट हुए। और उनका स्वर्गारोहण, निश्चित रूप से, उन प्रकटनों में से अंतिम होगा।

केवल 11 हैं, और यह 40 दिन की अवधि है क्योंकि पिन्तेकुस्त फसह के 50 दिन बाद आता है। इसलिए, हमारे पास 40 दिन हैं और केवल 11 दर्शन हैं। इसके अलावा, यीशु के पुनरुत्थान के पहले सप्ताह में, उनमें से सात दर्शन हैं।

और हमारे पास कुछ बड़े अंतराल हैं। उनमें से कुछ कब्र पर मौजूद महिलाओं और पीटर के लिए निजी हैं। और पुनरुत्थान के बाद की उन घटनाओं को समझना बहुत दिलचस्प बात है।

लेकिन मुझे लगता है कि यह बात मुझे प्रभावित करती है कि एक महीने से ज़्यादा समय तक इतने कम लोग ही आते हैं। आप सोचेंगे कि जब यीशु पुनर्जीवित हुए थे, तो वे एक प्रचारक बन गए होंगे, और वे वहाँ जाकर लोगों की बड़ी भीड़ के सामने खुद को दिखाएंगे, जैसा कि उन्होंने धरती पर शिक्षा देते समय किया था। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया।

अब उन्होंने अपने अनुयायियों को यह जिम्मेदारी सौंप दी है। सबसे पहले, वे उस सप्ताह ऊपरी कमरे में 11 लोगों के सामने प्रकट हुए। और आप कुछ कहानियाँ जानते हैं, जैसे कि थॉमस के साथ।

जब वे मछली पकड़ रहे थे और असफल हो गए, तो वह उनके सामने प्रकट हुआ। और फिर उसने उन्हें नाव के दूसरी तरफ जाने के लिए कहा। पतरस पानी में कूद गया, और भले ही वह किनारे को देखने में सक्षम नहीं था, लेकिन वह जानता था कि यह प्रभु की आज्ञा और सफलता है।

वे आग के चारों ओर बैठे, और अगर आप चाहें तो उन्होंने एक अच्छा पुराना तला हुआ मछली का भोजन खाया। और इसलिए, बहुत ज़्यादा दिखावे नहीं हुए। वह वहाँ था, और वह चला गया।

इम्माऊस का रास्ता भी एक और था। और उसने यह जिम्मेदारी सौंप दी है और अब प्रेरितों को इसे उठाना है। और वे संदेश की घोषणा के लिए जिम्मेदार हैं।

सबसे बड़ी उपस्थिति, निश्चित रूप से, स्वर्गारोहण के समय थी, जहाँ 500 से अधिक लोग थे, जैसा कि हमें यहाँ 1 कुरिथियों 15 में बताया गया है। और इसलिए, हमें इस समूह के लिए यह मान्यता मिल गई है। लेकिन फिर हमें पद 9 और 10 में पॉल के संदर्भ में एक मान्यता मिल गई है।

क्योंकि मैं प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ, पौलुस कहता है। मैं प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ जो प्रेरित कहलाने के योग्य नहीं है क्योंकि मैंने परमेश्वर की कलीसिया को सताया। लेकिन परमेश्वर की कृपा से, मैं जो हूँ वही हूँ।

और उसका अनुग्रह, जो मुझ पर बरसाया गया, व्यर्थ नहीं गया। लेकिन मैंने उन सभी से अधिक परिश्रम किया, फिर भी यह मेरे द्वारा नहीं, बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह से हुआ जो मुझमें था। इसलिए, हम कैफा, जेम्स और अन्य निजी प्रकटनों को देखते हैं, और उन लोगों की उपस्थिति को भी देखते हैं जो उसके स्वर्गारोहण के लिए इकट्ठे हुए थे।

लेकिन पॉल वहाँ नहीं था क्योंकि पॉल ने दमिश्क के रास्ते पर पुनर्जीवित प्रभु को देखा था। वह इस बात का उल्लेख अपनी कुछ आत्म-प्रमाणित गवाही में करता है कि उसने पुनर्जीवित प्रभु को देखा था, जो उसके प्रेरित होने की पुष्टि थी। मैंने उसे देखा।

मैंने उसे देखा। और फिर वह पद 11 में आगे बढ़ता है, फिर चाहे वह मैं हो या वे, दूसरे जो घोषणा करते हैं, इसलिए हम प्रचार करते हैं, और इसलिए आप विश्वास करते हैं। मुझे लगता है कि यह संभवतः उस प्रेरित समुदाय, यीशु के गवाहों के लिए एक संदर्भ है।

इसलिए, हमें शिक्षण की यह स्वीकृत परंपरा मिली है। हमें यह गवाही उन लोगों से मिली है जिन्होंने पुनर्जीवित प्रभु को देखा था। और यह सब इस तथ्य के सबूतों का एक पैकेज है कि यीशु अब कब्र में नहीं है, बल्कि वह पिता के पास वापस चला गया है और वह अब हमारे लिए एक मध्यस्थ है।

और पॉल जी उठे प्रभु के बारे में और अधिक सिखाएगा और यह ईसाई समुदाय के लिए क्या मायने रखता है। और इसलिए, हमें पुनरुत्थान के बारे में वह पहली गवाही मिल गई है। यह मसीह का पुनरुत्थान है।

लेकिन अब हम पुनरुत्थान के दूसरे पहलू पर आते हैं। यह उन लोगों का पुनरुत्थान है जो धरती पर मर चुके हैं। यह श्लोक 12 से 24 में एक दिलचस्प बात है।

ऐसा लगता है कि कुछ लोग थे जो इसे नकार रहे थे। आयत 12 को देखें। अब, अगर मसीह का प्रचार किया जाता है, मैं आज अमेरिकन स्टैंडर्ड वर्शन से पढ़ रहा हूँ, अगर मसीह का प्रचार किया जाता है कि वह मरे हुएों में से जी उठा है, तो आप में से कुछ लोग कैसे कहते हैं कि मरे हुएों का पुनरुत्थान नहीं है? इस बार, एक उद्धरण का उपयोग करने के बजाय, यह एक अप्रत्यक्ष उद्धरण है।

पॉल ने उन्हें यह कहकर श्रेय दिया कि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं है। लेकिन वह इसे थोड़े अलग रूप में प्रस्तुत करता है। सवाल यह है कि कोई यह क्यों कहेगा कि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं है? मसीह जी उठे।

आप ऐसा क्यों कहेंगे? तो, पौलुस ने पद 12 से 19 में पुनरुत्थान के इनकार का जवाब दिया। और कुरिन्थियों का वह पहला दावा इस बात से संबंधित है कि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं होता। पौलुस का जवाब क्या है? खैर, पद 13 से 18 को देखें।

इस कथा की प्रकृति के कारण, मैं बस इसे इंगित करना चाहता हूँ और इस पर एक तरह की टिप्पणी करना चाहता हूँ। लेकिन अगर मृतकों का पुनरुत्थान नहीं है, तो न ही मसीह को पुनर्जीवित किया गया है। इसलिए, यदि आप कहते हैं कि पुनरुत्थान नहीं है, तो आपने निहितार्थ रूप से, मसीह के पुनरुत्थान को अस्वीकार कर दिया है।

अब, बेशक, ग्रीको-रोमन सेटिंग में, शारीरिक पुनरुत्थान की अवधारणा उनके लिए कुछ अजीब थी। और इसलिए, आपको यहाँ ईसाई शिक्षा को स्वीकार करना होगा। पुराने नियम में पुनरुत्थान के इस विचार का इतना अधिक अग्रदूत नहीं है क्योंकि यह एक ऐसी अवधारणा नहीं थी जिस पर वहाँ ज़ोर दिया गया हो।

कुछ निहितार्थपूर्ण अंश हैं, लेकिन मसीह के पुनरुत्थान के साथ ही हमें पुनरुत्थान के तथ्य की पूरी प्रस्तुति मिलती है। लेकिन अगर मरे हुएों का पुनरुत्थान नहीं है, तो मसीह भी नहीं जी उठा है। और अगर मसीह नहीं जी उठा है, तो क्या हमारा प्रचार व्यर्थ है?

क्योंकि ईसाई धर्म के संदेश की वैधता का पूरा आधार मसीह का पुनरुत्थान है, अगर मसीह कब्र से बाहर नहीं आए, जैसा कि प्रेरितों ने गवाही दी है, तो ईसाई धर्म का कोई आधार ही नहीं है। और हमारा विश्वास व्यर्थ होगा।

पॉल इस मामले में बहुत स्पष्ट है। प्रचार, घोषणा, व्यर्थ है। इसका मतलब है कि आपका विश्वास व्यर्थ है।

इस पूरी परियोजना को कमज़ोर कर दिया गया है। फिर भी, हाँ, और हम परमेश्वर के झूठे गवाह पाए गए हैं। हम झूठे हैं।

हमने देखा कि परमेश्वर ने मसीह को जिलाया, यदि उसने उसे नहीं जिलाया, तो मरे हुए भी नहीं जी उठेंगे, क्योंकि यदि मरे हुए नहीं जी उठे, तो मसीह भी नहीं जी उठा। और यदि मसीह नहीं जी उठा है, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है। यह दोहराव है।

वह अपनी बात को एक व्यापक कथा के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। आप अभी भी अपने पापों में हैं। क्योंकि यदि पुनरुत्थान नहीं है, तो मसीह की मृत्यु का कोई प्रभाव नहीं है।

यदि मृत्यु की कोई प्रभावकारिता नहीं है, तो कोई उद्धार नहीं है जैसा कि हमने घोषित किया है। फिर वे भी जो मसीह में सो गए हैं, वे भी नष्ट हो गए हैं। उनके पास कोई आशा नहीं है।

अगर हमने इस जीवन में केवल मसीह पर ही आशा रखी है, तो हम सभी मनुष्यों में सबसे अधिक दयनीय हैं। सब कुछ यीशु के पुनरुत्थान पर निर्भर करता है। अब, इस बारे में बहुत सारे प्रकाशन हैं जिन्हें आप आसानी से देख सकते हैं और पुनरुत्थान के महत्व पर विस्तार से बता सकते हैं।

बहुत सारे दिलचस्प क्षमाप्रार्थी लेखन हुए हैं, यहाँ तक कि 1800 के दशक में इंग्लैंड में भी, जहाँ कुछ व्यक्ति जो मूल रूप से नास्तिक थे, उन्होंने सुसमाचारों का मूल्यांकन करने और इस तथ्य के संबंध में एक पुस्तक लिखने का बीड़ा उठाया कि मसीह पुनर्जीवित नहीं हुए। अपने शोध की प्रक्रिया में, वे ईसाई बन गए क्योंकि उन्होंने मसीह के पुनरुत्थान के लिए विहित सुसमाचारों के तर्क की गवाही, वैधता और तार्किकता को स्वीकार कर लिया।

या तो वे लोग पागल थे, या फिर वे सच बोल रहे थे। वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि वे सच बोल रहे थे। पुनरुत्थान ही संदेश है।

आप इससे इनकार नहीं कर सकते। और इसलिए, पॉल जवाब देते हैं, सबसे पहले, कोई पुनरुत्थान नहीं, कोई ईसाई धर्म नहीं। अगर मृतकों का पुनरुत्थान नहीं होता, तो पूरी परियोजना ही बर्बाद हो जाती है।

इसके अलावा, पौलुस पद 19 में इन कुरिन्थियों की कुछ अदूरदर्शिता का जवाब देता है। इस पद पर ध्यान दें। अगर हमने इस जीवन में केवल मसीह पर ही आशा रखी है, तो हम सभी मनुष्य सबसे अधिक दयनीय हैं।

अगर यह जीवन ही सब कुछ है, तो इसका मतलब है कि कोई परलोक नहीं है। कोई भविष्य का जीवन नहीं है। बाइबल स्पष्ट है, और पौलुस ने पत्रों में स्पष्ट किया है कि शरीर से अनुपस्थित होना प्रभु के साथ उपस्थित होना है।

दूसरा कुरिन्थियन दावा यह प्रतीत होता है कि यदि हमारे पास केवल अभी ही आशा है और भविष्य में नहीं, तो हम सबसे अधिक दयनीय हैं। उनका कोई भविष्य नहीं है। कोई अंतिम समय नहीं है।

अब केवल अब है। 20 से 34 आयतों में पौलुस का उत्तर एक और लंबा उत्तर है, लेकिन यह अपनी कथात्मक शैली के अर्थ में लंबा है। लेकिन अब मसीह मरे हुएों में से जी उठा है, पौलुस जोर देकर कहता है, जो सो गए हैं उनमें से पहला फल है।

वह पुनरुत्थान का पहला व्यक्ति है। अब, उससे पहले भी कुछ दिलचस्प पुनरुत्थान हुए हैं। पुराने नियम में, याद कीजिए, उन्होंने एलिय्याह को, मेरे तथ्य यहाँ पाएँ, एक मृत सीरियाई की कब्र में फेंक दिया, मुझे लगता है कि वह था, और वह मृतकों में से वापस आ गया।

हमारे पास नैन के बेटे की विधवा भी है। हमारे पास लाजर है जो मृतकों में से वापस आया। हमारे पास मसीह के पुनरुत्थान से पहले के कुछ रोचक पुनरुत्थान हैं, लेकिन धार्मिक, धार्मिक रूप से, और यह एक धार्मिक निर्माण है, मसीह के पुनरुत्थान से पहले पुनर्जीवित होने वाले किसी भी व्यक्ति को उनके नश्वर शरीर में पुनर्जीवित किया गया था और उन्हें फिर से मरना होगा।

यदि आप लाजर के संदर्भ में इस बारे में सोचते हैं, तो यह धार्मिक सोच में जोर से आगे बढ़ने के लिए एक बहुत ही दिलचस्प विचार है। लेकिन मसीह पहले व्यक्ति हैं जिन्हें पुनर्जीवित किया गया, वापस जाने के लिए नहीं, बल्कि पुनर्जीवित शरीर में होने के लिए। लाजर पुनर्जीवित शरीर में वापस नहीं आया।

वह एक सामान्य शरीर में वापस आ गया। यीशु पहले व्यक्ति थे जो पुनर्जीवित शरीर में थे, जो एक नए क्षेत्र के लिए अनुकूलित था, दीवारों से होकर गुजरता था, समय और स्थान से परे था, और इसी तरह और भी बहुत कुछ। वहाँ बहुत सी रोचक छोटी-छोटी जानकारियाँ हैं।

उसने मछली खाई, और फिर भी, पुनर्जीवित शरीर में, हम उस तरह की बात के बारे में नहीं सोचेंगे। आप यह सब कैसे वर्णन करेंगे? खैर, यह एक दिलचस्प परियोजना है, है न? लेकिन तथ्य यह है कि मसीह पुनर्जीवित शरीर में था। श्लोक 21, क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई, तो मनुष्य के द्वारा, अर्थात् यीशु के द्वारा, मृतकों का पुनरुत्थान भी हुआ।

इसलिए, पुनरुत्थान के इस इनकार के प्रति पौलुस की प्रतिक्रिया तीन गुना है। सबसे पहले, पौलुस पुष्टि करता है कि मृतकों का पुनरुत्थान मृतकों के पुनरुत्थान की पुष्टि करता है, और वह पद 20 से 28 में इसके महत्व को समझाता है। फिर अंत आता है, जब वह परमेश्वर के राज्य को सौंप देगा।

वह पद 23.25 में पुनरुत्थान के इन आदेशों के बारे में बात करता है, क्योंकि उसे तब तक शासन करना चाहिए जब तक वह सभी शत्रुओं को अपने पैरों तले न कर दे। अंतिम शत्रु जो समाप्त किया जाएगा वह मृत्यु है।

मृत्यु ईडन गार्डन में आई, और पृथ्वी के इतिहास का अंत मृत्यु के उन्मूलन से हुआ, क्योंकि उसने सभी चीजों को अपने पैरों के नीचे कर दिया। लेकिन जब उसने कहा कि सभी चीजें उसके अधीन हैं, तो यह स्पष्ट है कि वह स्वीकार किया गया है जिसने सभी चीजों को उसके अधीन कर दिया।

और जब सब कुछ उसके अधीन हो जाएगा, तब पुत्र भी स्वयं उसके अधीन हो जाएगा। तो, इस परिदृश्य में सब कुछ पिता को सौंप दिया गया है। श्लोक 29 दूसरा बिंदु है, जो यहाँ एक अजीब बिंदु है।

अन्यथा, यदि पुनरुत्थान सत्य नहीं है, यदि अंतिम समय का निष्कर्ष सत्य नहीं है, पद 29, अन्यथा वे क्या करेंगे जो मृतकों के लिए बपतिस्मा लेते हैं? यदि मृतकों को बिल्कुल भी नहीं उठाया जाता है, तो फिर उनके लिए बपतिस्मा क्यों लिया जाता है? हम भी हर घंटे खतरे में क्यों खड़े रहते हैं? दूसरे शब्दों में, सुसमाचार के लिए हमारा बलिदान। अब, हम सभी को यह स्वीकार करना होगा कि पद 29 इस प्रवाह में अजीब लगता है, और हम नहीं जानते कि हम इस संदर्भ में क्या जानना चाहेंगे कि पौलुस के लिए इसे लाना इतना महत्वपूर्ण क्यों था। मृतकों के लिए बपतिस्मा लेने के उस मूल समुदाय में क्या परिदृश्य था जो इसे यहाँ उल्लेख करने के लिए इतना महत्वपूर्ण बनाता है? सभी टिप्पणियाँ इस बारे में बात करती हैं।

जैसा कि वे कहते हैं, यह बेहद मुश्किल है। उनका कहना है कि हर दृष्टिकोण को अस्थायी माना जाना चाहिए। गोडेट, एक पुराने टिप्पणीकार ने इस वाक्यांश की 30 व्याख्याएँ गिनाईं।

थिसलटन ने इस चरण के लिए 13 वैध प्रस्ताव विस्तार से प्रस्तुत किए हैं। इनमें से कुछ सबसे प्रमुख हैं, जैसा कि मैंने पृष्ठ 223 के नीचे उल्लेख किया है, इस वाक्यांश का अर्थ मृतकों के स्थान पर हो सकता है। इसे फिट्ज़मेयर द्वारा प्रॉक्सी बपतिस्मा कहा जाता है, जो उन मित्रों या रिश्तेदारों के लिए बपतिस्मा होता है जो विश्वासी थे, लेकिन बपतिस्मा लेने से पहले ही मर गए।

तो, यह एक तरह का प्रतिस्थापन बपतिस्मा है। क्यों? हमारे पास इसका कोई स्पष्टीकरण नहीं है, लेकिन यह एक दृष्टिकोण है, एक प्रमुख दृष्टिकोण, प्रॉक्सी बपतिस्मा। इस दृष्टिकोण को कुछ लोग प्रतिनिधि बपतिस्मा भी कहते हैं।

यदि आप थिसलटन की प्रमुख प्रस्तुतियों को पढ़ेंगे, तो आप देखेंगे कि कुछ विचारों में बहुत सारे उपसमूह हैं। यह संभवतः बहुमत की राय है, प्रॉक्सी या प्रतिनिधि बपतिस्मा का यह विचार, लेकिन हम नहीं जानते। एक और, जो बहुत आम है लेकिन शायद थोड़ा बहुत सतही है, वह यह है कि लोग अपने दोस्तों या रिश्तेदारों की गवाही के कारण बपतिस्मा लेते हैं, जो मर चुके हैं, जिन्होंने उन्हें मसीह के बारे में बताया था, लेकिन अब वे चले गए हैं।

और ये लोग दोषी ठहराए जाते हैं, और वे विश्वास करते हैं क्योंकि आंटी सारा ने उनकी गवाही दी थी, लेकिन अब वह मर चुकी है, और मैं उसके सम्मान में बपतिस्मा ले रहा हूँ क्योंकि मैं मसीह को जान गया हूँ। जैसा कि एक लेखक ने कहा है, जीवित लोग मसीह की ओर मुड़ते हैं और विश्वास करने वाले प्रियजनों की गवाही के कारण बपतिस्मा लेते हैं जो मसीह में मर चुके हैं, और इसलिए अब हमारे पास अंतिम पुनरुत्थान में उनसे मिलने की आशा है। यह इस अंश के उत्तर की एक लोकप्रिय तरह की प्रस्तुति है, लेकिन यह विचारों में से एक है।

थिसलटन ने ग्रीक में पूर्वसर्ग के लिए बपतिस्मा का विकल्प चुना, मृतकों के लिए, जिसका अर्थ है पुनरुत्थान में मृतकों के साथ एकजुट होने की आशा में जीवित लोगों की गवाही। यह प्रॉक्सी

विकेरियस बपतिस्मा का एक रूपांतर है। थिसलटन की श्रेणी में ऐसे बदलाव हैं जो प्रॉक्सी बपतिस्मा के विचार को दर्शाते हैं।

तो, दिन के अंत में, यह यहाँ श्लोक 29 में तैरता हुआ आता है और हमें चौंका देता है, लेकिन यह पहली सदी के रोमन कोरिंथ समुदाय के लिए कुछ गंभीर बात थी कि उस संबंध में क्या चल रहा था। अगर यह एक धार्मिक समस्या होती, तो मुझे लगता है कि पॉल ने इस पर विस्तार से बात की होती। यह शायद अधिक व्यावहारिक, अधिक कार्यात्मक था, जो **लोग थे, क्योंकि बपतिस्मा** और यीशु पर विश्वास करना बहुत हद तक एक दूसरे से जुड़े हुए थे।

ऐसा नहीं है कि बपतिस्मा ने उन्हें पुनर्जीवित किया, लेकिन बपतिस्मा मसीह में उनके विश्वास से जुड़ी एक ऐसी गवाही थी जो उन लोगों से जुड़ती है जो किसी तरह से उनसे पहले गुजर चुके हैं, और शायद किसी तरह की गवाही के रूप में। इसके अलावा, भविष्य में पुनरुत्थान वर्तमान में पीड़ा को प्रेरित करता है। श्लोक 30, अगर पुनरुत्थान सत्य नहीं है तो हम हर घंटे खतरे में क्यों खड़े हैं? लोग खुद को शहीद होने, सताए जाने की अनुमति क्यों देंगे? चर्च के इतिहास के माध्यम से, मृतकों में से मसीह का पुनरुत्थान जो उसकी मृत्यु की वैधता को सील करता है और प्रेरितों की गवाही के द्वारा हमें मुक्ति प्रदान करता है, अगर पुनरुत्थान की वास्तविकता नहीं होती तो शहीदों का यह लंबा इतिहास क्यों मौजूद होता? हे भाइयों, मैं तुम पर उस गौरव के द्वारा विरोध करता हूँ, जो मुझे मसीह, यीशु हमारे प्रभु में है, मैं प्रतिदिन मरता हूँ।

मैं उस शाब्दिक अनुवाद पर थोड़ा अटक रहा हूँ। यह थोड़ा स्टैकाटो शैली में पढ़ता है। एनआईवी, श्लोक 31, मैं हर दिन मौत का सामना करता हूँ, हां, ठीक वैसे ही जैसे मैं हमारे प्रभु मसीह यीशु में आपके बारे में गर्व करता हूँ।

अगर मैंने इफिसुस में जंगली जानवरों से लड़ाई लड़ी, तो मुझे क्या फायदा हुआ, जब तक कि मरे हुए लोग नहीं जी उठते? और यह ऐसा है जैसे कि आप अपने हाथ ऊपर उठाकर कहावत को स्वीकार कर लें, चलो खाएँ और पिएँ क्योंकि कल हम मर जाएँगे। कई संस्कृतियों में, खाएँ, पिएँ और मौज-मस्ती करें, क्योंकि कल हम मर जाएँगे। अगर यह जीवन ही वह सब है जिसकी हमें उम्मीद है, तो हम दुनिया में क्यों बलिदान देते हैं, अगर यह सच न होता कि मसीह जी उठे और हमें पुनरुत्थान का वादा किया गया है, और मसीह के पुनरुत्थान के आधार पर हमें एक उद्धार मिलता है जो अपने साथ एक नैतिकता लाता है जिसे हमें बनाए रखना चाहिए।

अपने उद्धार को बनाए रखने के लिए नहीं, अपने उद्धार को पाने के लिए नहीं, बल्कि उस परमेश्वर का आदर करने के लिए जिसने वह उद्धार प्रदान किया है। क्योंकि अनुग्रह से हम विश्वास के द्वारा बचाए जाते हैं, किसी काम से नहीं। यह केवल अनुग्रह है।

लेकिन हम काम करेंगे। हम मसीह यीशु में उसकी कारीगरी हैं। हर कोई इफिसियों 2, 8, और 9 का हवाला देता है, लेकिन वे कभी भी श्लोक 10 पर नहीं जाते।

हम उसकी कारीगरी हैं। हम परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए उद्धार के लिए किसी भी दास की तरह काम करेंगे। और पॉल कह रहा है, यह पागलपन होगा यदि मसीह के पुनरुत्थान और इसलिए उद्धार की वैधता के लिए कोई वैधता नहीं थी।

श्लोक 33 और उसके बाद। यह एक विदाई टिप्पणी है। यह एक तरह से एक चेतावनी है।

यह एक, कृपया समझदार बनें। धोखा न खाएं। बुरी संगति अच्छे आचरण को भ्रष्ट कर देती है।

यह कहावत सच है। यह कुछ-कुछ वैसा ही है जैसा मेरे पिताजी कहा करते थे, एक ही तरह के पक्षी एक साथ रहते हैं। क्या आपने कभी यह कहावत सुनी है? हमारे कुछ माता-पिता ने शायद हमें यह बात बहुत गहराई से सिखाई होगी क्योंकि उन्हें वे लोग पसंद नहीं थे जिनके साथ हम घुलते-मिलते थे।

परन्तु बुरी संगति अच्छे आचरण को बिगाड़ देती है। धर्मी रूप से संयम से जाग उठो और पाप मत करो, क्योंकि कुछ लोग परमेश्वर को नहीं जानते। मैं यह इसलिये कहता हूँ कि तुम लज्जित हो जाओ।

मुझे थोड़ा आसान अनुवाद पढ़ने दीजिए। ये नए अनुवाद हमारे लिए यही करते हैं। श्लोक 32 या श्लोक 33।

गुमराह मत होइए। बुरी संगति अच्छे चरित्र को सुधारती है। अब यह एक तरह से उन लोगों के खिलाफ़ एक बयान है जो पुनरुत्थान को नकार रहे हैं।

ऐसे लोगों के साथ मत घूमो। अपने होश में आओ और पाप करना बंद करो। अच्छे धर्मशास्त्र से भटकना पाप है।

क्यों? क्योंकि यह परमेश्वर की प्रकट इच्छा का उल्लंघन है। पाप कोई प्यारा सा शब्द नहीं है। पाप सिर्फ़ एक धार्मिक शब्द है जो उल्लंघन को दर्शाता है, परमेश्वर की प्रकट इच्छा का उल्लंघन है।

क्योंकि कुछ लोग ईश्वर के बारे में अनभिज्ञ हैं। मैं यह आपकी शर्म के लिए कह रहा हूँ। याद रखें कि यह सम्मान और शर्म की संस्कृति है।

और पॉल उन्हें शर्मिंदा करने और पुनरुत्थान को अस्वीकार करने के लिए बुला रहा है। भले ही वे कहें, ठीक है, मैं यीशु के पुनरुत्थान को अस्वीकार नहीं करता। यह विशेष है।

लेकिन मैं मनुष्यों के पुनरुत्थान और कुछ अंतिम समय की बात को नकार रहा हूँ। यह काम नहीं करेगा। मसीह का जी उठना हमारे पुनरुत्थान का वादा है और छुटकारे के इतिहास में उस परिदृश्य को सील करता है।

वह उठे, हम भी उठेंगे। खैर, यह पुनरुत्थान के तथ्य का दावा है। लेकिन यह इस समूह को संतुष्ट नहीं करता।

हमें आगे बढ़ना होगा। 35 से 58 में पुनरुत्थान शरीर का सवाल भी है। अगर आप एक पल के लिए पीछे खड़े हों तो आपको यह स्वीकार करना होगा।

अविश्वासी दृष्टिकोण से यह सब बहुत तार्किक है। यीशु के मृतकों में से जी उठने के खिलाफ अविश्वासी लोगों ने हमेशा से लड़ाई लड़ी है। यहाँ तक कि पहली सदी में भी वे इसे स्वीकार नहीं करते थे।

उन्होंने कहा कि पहरेदार सो गए और यीशु का शरीर कब्र से चुरा लिया गया। वापस जाओ और सुसमाचार पढ़ो। शुरू से ही असली पुनरुत्थान, चमत्कार के तथ्य को नकारने के बहाने बनाए जा रहे थे।

और परिणामस्वरूप भविष्य के पुनरुत्थान का मुद्दा। ईसाई धर्म के कुछ हिस्सों में भविष्य की दुनिया, भविष्य के पुनरुत्थान, स्वर्ग के बजाय अनंत नींद का विचार भी है, जैसा कि इस शब्द का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया गया है। पुनरुत्थान का तथ्य ईसाई सत्य में एक आवश्यक आधार है।

यदि आप इसे स्वीकार नहीं कर सकते हैं तो आप सुसमाचार के प्रचार को स्वीकार नहीं कर सकते हैं क्योंकि यह उसमें एक आवश्यक आधार है। लेकिन क्या यह हमें अजीब नहीं लगता? इसलिए हम कहते हैं कि यह कैसे हो सकता है? आप कैसे कर सकते हैं, व्हिटक्लिफ़ जिसे जला दिया गया था और उसकी राख टेम्स नदी में फेंक दी गई थी, वे लोग जो विश्वासी थे और जिनका दाह संस्कार किया गया था, वे कैसे वापस आ सकते हैं? उनके शरीर चले गए हैं। भगवान के पास काम करने के लिए कुछ होना चाहिए।

खैर, यह सब काफी दिलचस्प है और मानवीय सोच और मानवीय निर्माणों के लिए काफी चुनौतीपूर्ण है। लेकिन यह भगवान के लिए कोई समस्या नहीं है क्योंकि हमारे बारे में जो सच है, हाँ हमारे पास एक भौतिक शरीर है लेकिन पुनरुत्थान में आपके पास एक नया शरीर है। और वह पुराना शरीर अप्रासंगिक है कि उसे कीड़े खा गए हैं या जला दिया गया है, यह अप्रासंगिक है क्योंकि असली आप इन मानव शरीरों से जुड़े हुए हैं जैसे कि हम हैं, वह स्थायी सार है।

लेकिन पुनरुत्थान में। आपके पास एक नया शरीर है और वह पुराना शरीर अप्रासंगिक है कि इसे कीड़ों ने खा लिया है या जला दिया है, यह अप्रासंगिक है क्योंकि असली आप हैं। हम जैसे ही इन मानव शरीरों से जुड़े हैं, वह स्थायी सार है। हम इसे आत्मा कहते हैं - शरीर, आत्मा और आत्मा। लेकिन आत्मा और आत्मा एक ही अमूर्त भाग हैं। यही वह चीज है जो अनंत काल तक बनी रहती है। यह बदलते रूपों से गुजरती है और पॉल बस एक सेकंड में उस पर आने वाला है।

अगली समस्या के खिलाफ बहस करने के लिए। और यह ठीक है। आपका पुनरुत्थान हो सकता है। अब मुझे समझाएं। यह पुनरुत्थान शरीर कैसा होने जा रहा है। श्लोक 35। इस पर ध्यान दें। लेकिन कोई कहेगा। यहाँ कथा की बयानबाजी की प्रकृति है। वार्ताकार, वह व्यक्ति जो पॉल के साथ बहस कर रहा है जो वास्तव में समुदाय में है।

लेकिन अब पॉल इसे स्थापित कर रहा है। लेकिन कोई कहेगा। मरे हुए कैसे जी उठते हैं? वे कैसे और किस तरह के शरीर के साथ आते हैं? अब उन्हें लगता है कि उनके पास पॉल है।

दुविधा के मुहाने पर। कैसे और क्या हैं दो मुद्दे? इस भाग में, पॉल एक अविश्वासी प्रश्न का उत्तर दे रहा है। जब मनुष्य के शरीर विघटित हो जाते हैं, तो वह कैसे उठ सकता है? यह एक वैध प्रश्न है।

लेकिन जब यह सुसमाचार के प्रचार से अविश्वास में एक आस्तिक द्वारा पूछा जाता है। यह एक अलग मामला है। पॉल इस तरह के अविश्वास को मूर्खता मानता है।

और अविश्वास ही क्रियाशील शब्द है। आप देखिए, दिन के अंत में, मेरे दोस्तों। हम उन प्रस्तावों के प्रति प्रतिबद्ध हैं जो बाइबल ने हमें दिए हैं।

परम वास्तविकता के बारे में। हम इसे वापस टेस्ट ट्यूब में नहीं डाल सकते। हम ऐतिहासिक रूप से इससे दूर हैं।

और परमेश्वर वापस आ सकता है और चमत्कारी तरीकों से हमसे संवाद कर सकता है। क्या आपको लगता है कि इससे आप विश्वास कर पाएँगे? खैर, यह वास्तव में नहीं होगा। वास्तव में, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक इस बात की गवाही बन जाती है क्योंकि ऐसा लगता है कि एलिय्याह और एलीशा शायद मृतकों में से जी उठे हैं और दो गवाह बन गए हैं।

और शायद मूसा भी इसमें शामिल है। तीन गवाह हैं, है न? हाँ। और वे उपदेश देते हैं, और वे घोषणा करते हैं, और वे चमत्कार करते हैं।

या फिर कोई अपनी आत्मा और शक्ति से। और फिर भी लोग इस पर विश्वास नहीं करते। आप देखिए, लोग चमत्कार के आधार पर विश्वास नहीं करते।

लोग इसलिए विश्वास करते हैं क्योंकि वे क्रूस और पुनरुत्थान के संदेश की प्रस्तुति और दुनिया के ईश्वर के संप्रभु आयोजन को स्वीकार करते हैं। इसलिए, आप किसी को विश्वास में लाने के लिए मजबूर नहीं कर सकते। उन्हें यह काम अपने भीतर ही करना होगा।

अब हमारे पास एक गुप्त साधन है और वह है परमेश्वर की पवित्र आत्मा का दृढ़ विश्वास। हम सभी मसीह के पास इसलिए आए हैं क्योंकि हमें यह विश्वास है कि सुसमाचार सत्य है। और शास्त्र के कथन सत्य हैं।

और ये हम पर भी लागू होते हैं। और इसका कोई विकल्प नहीं है। आप लोगों के साथ तर्क नहीं कर सकते।

अब, आप लोगों के साथ तर्क कर सकते हैं ताकि उनकी अपनी आंतरिक प्रक्रियाओं में, वे उस तर्क की सच्चाई को देख सकें। लेकिन कुछ लोग नहीं देखेंगे। और अगर वे नहीं देखेंगे, तो आप उनसे स्वर्ग में जाने के लिए तर्क नहीं कर सकते।

उन्हें विश्वास करना होगा, और विश्वास करना ईश्वर की आत्मा की एक गतिविधि है। दो प्रश्न। कैसे और किस रूप में? टैल्बर्ट ने पृष्ठ 224 पर बीच में एक टिप्पणी की है।

श्लोक 35 से 58, 33 से 58 तक, दो कोरिंथियन प्रश्नों के बाद पॉलिन के उत्तर हैं, लेकिन विपरीत क्रम में। हम दूसरे प्रश्न का उत्तर पहले प्राप्त करेंगे, और पहले प्रश्न का उत्तर अंत में। पहला प्रश्न, मृतकों को कैसे उठाया जाता है, इसका उत्तर अध्याय के उत्तरार्ध में दिया गया है।

दूसरा सवाल, कि वे किस तरह के शरीर से आते हैं, का उत्तर पहले दिया जाता है। इसलिए हम सबसे पहले यह देखेंगे कि अगर कोई व्यक्ति विघटित हो जाता है, अगर वह चला जाता है, अगर हम उसके शरीर को पुनर्जीवित कर देते हैं, तो वह किस तरह के शरीर में वापस आ सकता है। और यहाँ वह ज्ञान आता है जो अगर आप, हमें कहना चाहिए कि केवल भगवान ही दे सकता है।

पॉल प्रकृति से एक तर्क लेकर वापस आता है जो यहाँ हमारे दिमाग को झकझोर कर रख देगा। अध्याय 15, श्लोक 36 से 49 में। दिलचस्प बात यह है कि भूमध्यसागरीय प्राचीनता में, जब आप बाइबल का अध्ययन करते हैं, तो आप भूमध्यसागरीय इतिहास का अध्ययन कर रहे होते हैं, कम से कम पहली सदी में।

भूमध्यसागरीय प्राचीन काल में, जैसा कि अब है, यह पुनरुत्थान के बारे में एक मानक, वस्तुनिष्ठ प्रश्न है। यह सिर्फ़ ईसाइयों ने ही नहीं पूछा था, बल्कि जब भी प्राचीन काल में पुनरुत्थान के मुद्दे का सवाल उठता है, तो इसी तरह और इसी तरह प्रस्तुत किया जाता है। इसलिए ये रोमन विश्वासी, ये रोमन कोरिंथ विश्वासी, वही कर रहे हैं जो उनके लिए स्वाभाविक था, जिसने उन्हें अन्य तरीकों से भी परेशानी में डाल दिया था।

श्लोक 36 से 44 में हमें निरंतरता और असंततता मिलती है। यह एक ही है लेकिन यह अलग है। श्लोक 36 को देखें।

मैं NIV पढ़ने जा रहा हूँ ताकि यहाँ यह इतना अजीब न लगे। श्लोक 36. कितनी मूर्खता है कि जो तुम बोते हो वह तब तक जीवित नहीं होता जब तक वह मर न जाए।

तो, पॉल की प्रकृति से अपील। मृत्यु का सिद्धांत। क्या आपने कभी बगीचा लगाया है? मुझे बागवानी पसंद है, और मैंने कुछ बगीचे लगाए हैं।

अगर आप मकई के बगीचे में बीज डालते हैं, तो मकई का एक बीज जमीन में डाला जाता है। यह बिखर जाता है, लेकिन उस एक बीज से एक डंठल निकलता है, और डंठल पर कम से कम दो मकई के दाने होंगे जिन पर मकई के सैकड़ों बीज होंगे। यह मर गया, यह बिखर गया, इसने नया जीवन दिया।

यह वही बात है। आपको मकई के बीज से हरी फलियाँ नहीं मिलतीं। आपको मकई के बीज से मटर नहीं मिलती।

आपको मक्का मिलता है। यह वही है, लेकिन यह अलग है। यही मृत्यु का सिद्धांत है।

अगर आप इसे कृषि के प्राकृतिक जीवन के संदर्भ में जमीन में डालेंगे, तो आपको वही चीज वापस मिलेगी, लेकिन यह अलग होगी। वही लेकिन अलग। पुनर्जीवित शरीर में मृत्यु का सिद्धांत।

एक बार जब व्यक्ति मर जाता है तो आप उस भौतिक शरीर के साथ जो चाहें कर सकते हैं। लेकिन वे वापस आएँगे क्योंकि विघटन अप्रासंगिक है क्योंकि बीज जारी रहता है, और यह इस तथ्य का हिस्सा है कि आत्मा एक पदार्थ है। दार्शनिक रूप से, आत्मा पदार्थ है और अनंत काल तक जारी रहती है।

पद 37: जब आप बोलते हैं, तो आप एक शरीर नहीं बोलते हैं जो सिर्फ एक बीज होगा, शायद गेहूँ का या किसी और चीज़ का। यह परिवर्तन का सिद्धांत है जैसा कि मैंने पहले ही वर्णित किया है। पद 38 लेकिन परमेश्वर इसे एक शरीर देता है जैसा उसने निर्धारित किया है, और प्रत्येक प्रकार के बीज को, वह अपना शरीर देता है।

आप जो बोलते हैं, वही आपको मिलता है, भले ही वह बिखर जाए। परमेश्वर की संप्रभुता का सिद्धांत। पद 38बी में निरंतरता का सिद्धांत प्रत्येक प्रकार के बीज को वह अपना शरीर देता है।

इसमें निरंतरता है। यह एक ही है, लेकिन यह अलग है - अनुकूलनशीलता का सिद्धांत।

श्लोक 39-41: सभी शरीर एक जैसे नहीं होते। लोगों का शरीर एक प्रकार का होता है। जानवरों का शरीर दूसरे प्रकार का होता है।

पक्षी अलग हैं। मछलियाँ अलग हैं। आकाशीय पिंड और सांसारिक पिंड भी हैं।

लेकिन आकाशीय पिंडों का तेज एक तरह का होता है, और पृथ्वी के पिंडों का तेज दूसरे तरह का होता है। सूर्य का तेज एक तरह का होता है। चंद्रमा और तारे दूसरे तरह के होते हैं, और तारे का तेज तारे से अलग होता है।

हर तारा अलग है। हर बर्फ का टुकड़ा अलग है। यह ऐसी चीज़ है जो मुझे हैरान कर देती है।

आप इन सब पर शोध कैसे करते हैं? लेकिन जाहिर है, ऐसा ही है। वे सभी अलग-अलग हैं। हर इंसान का फिंगरप्रिंट अलग-अलग होता है।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं? यह कैसे हो सकता है? इतना कि अब हमारे पास एक विशाल फिंगरप्रिंट डेटाबेस है। अगर आप कोई अपराध करते हैं और आपका फिंगरप्रिंट लिया गया है और यह डेटाबेस में है, तो वे आपको ढूँढ लेंगे। क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है? सृजन एक अद्भुत चीज़ है।

आपके पास मृत्यु, परिवर्तन, ईश्वर की निरंतरता की संप्रभुता और सृजित प्रकारों की अनुकूलनशीलता का सिद्धांत है। फिर आपके पास रूप का परिप्रेक्ष्य है। इसलिए आपके पास केवल यह मुद्दा नहीं है कि इसे प्रकृति से कैसे समझाया जाता है।

आइए आयत 42 से 45 में रूप के बारे में सोचें। तो, क्या यह मृतकों के पुनरुत्थान के साथ होगा? यहाँ एक सादृश्य है।

यह प्रकृति के पुल से मनुष्य तक निर्माण हो रहा है। तो क्या शरीर के पुनरुत्थान के साथ भी ऐसा ही होगा? जो शरीर सिल दिया गया है, वह नाशवान है।

यह सड़ने वाला है। शव-संरक्षण से कुछ सुरक्षित रह सकता है, लेकिन आप इसे पूरे इतिहास में नहीं रख सकते। आपको युद्ध के मैदान में मौतें देखने को मिलेंगी, जहाँ लोग गोले या ग्रेनेड से क्षत-विक्षत हो जाते हैं।

आपके पास ऐसे मशहूर लोग हैं जिन्हें सूली पर जला दिया गया और वे बिखर गए। और आपके पास ऐसे कई तरीके हैं जिनसे शरीर खत्म हो जाता है। यह नाशवान है।

लेकिन यह अविनाशी रूप से पुनर्जीवित हो गया है। इसे एक नया शरीर मिला है। इसमें निरंतरता है, लेकिन इसमें अंतर भी है। इसमें निरंतरता है, और इसमें विविधता भी है। इसे अपमान में सिल दिया गया है। मृत्यु कोई सुंदर चीज़ नहीं है।

यह महिमा में पला बढ़ा है। यह कमजोरी में सिल दिया गया है। यह शक्ति में पला बढ़ा है।

यह प्राकृतिक शरीर में सिल दिया जाता है। इसे आध्यात्मिक शरीर में बदल दिया जाता है। तो यहाँ हमारे पास क्या है? पृष्ठ 225.

एक नया जीवन सिद्धांत। भ्रष्ट से अविनाशी। एक नया मूल्य।

महिमा का अपमान। महिमा का अभाव ही अपमान है। मृत शरीर का क्या फ़ायदा? यह एक बदसूरत चीज़ है।

यह दुखद बात है। मैं विंस्टन-सलेम, उत्तरी कैरोलिना के एक बड़े अस्पताल में सप्ताहांत पर आपातकालीन कक्ष में काम करता था। हम एक दिन में तीन से पांच सौ लोगों को देखते थे।

और सप्ताहांत में जब मैं आधी रात की शिफ्ट में काम करता था, तो हमें बहुत बड़ी दुर्घटनाएँ होती थीं। मुझे आज भी यह सब ऐसे याद है जैसे कल की ही बात हो। अस्पताल से कुछ ही दूर एक सड़क पर एक दुर्घटना हुई थी।

एक टैंकर सड़क से उतर गया और उसमें विस्फोट हो गया, और एक कार दुर्घटना में शामिल थी। और वहाँ एक जोड़ा था, एक सगाईशुदा जोड़ा। पुरुष बच गया, लेकिन महिला नहीं बची।

हमें ईएमएस और एम्बुलेंस से कॉल आया जो उन्हें ला रही थी। लेकिन उन्होंने हमें चेतावनी दी। वे लड़की को ला रहे थे, लेकिन उन्होंने कहा कि उसे कवर नहीं किया जाएगा क्योंकि लड़का उनके पीछे पागलों की तरह खड़ा था।

वे उसे अंदर ले आए, और जब मैंने उस गर्नी और उसके मुड़े हुए चेहरे को देखा, तो मुझे तुरंत पता चल गया कि वह चली गई है। वह युवक उन्माद में आया, और नर्सों ने उसकी देखभाल की। लड़की मर चुकी थी।

खैर, हमने उस युवक को यह बात बताई, और वह बहुत दुखी हुआ। और उसका परिवार वर्जीनिया के रोआनोक में रहता था, और उसने उन्हें फोन किया, और जब उसने उन्हें फोन किया और उन्होंने उसके बारे में पूछा, तो आप उस एकतरफा टेलीफोन बातचीत से बता सकते हैं, जब उन्होंने उसके बारे में पूछा तो वह केवल इतना ही कह सका कि वह बच नहीं पाई। वह खुद को यह कहने के लिए तैयार नहीं कर सका कि वह मर चुकी है।

मुझे यह कहानी पता चली और 60 के दशक में जब यह कहानी घटी, तब लोग आज की तरह साथ-साथ नहीं रहते थे। कम से कम बहुत बार नहीं। और वे सालों से अपनी शादी की योजना बना रहे थे और उनकी शादी में बस कुछ ही हफ्ते बचे थे।

और यह बिलकुल स्पष्ट था कि वे भगवान का सम्मान करने की कोशिश कर रहे थे और इंतज़ार कर रहे थे। और वह अपने माता-पिता को बस इतना ही बता सका कि वह बच नहीं पाई। उसने यह बात कई बार कही जैसे कि उन्हें उस पर विश्वास ही नहीं हुआ।

वह बच नहीं पाई। वह मर चुकी थी। वह एक शरीर था, लेकिन व्यक्ति चला गया था।

वह शरीर बिखर जाएगा। हम अपनी संस्कृति में उस शरीर का कई तरह से सम्मान करते हैं, लेकिन वे चले गए हैं। यह एक नया जीवन सिद्धांत है।

उस मानव की महिमा जो एक तरह से उस शरीर द्वारा कैद कर ली गई थी। लेकिन शरीर मानव होने का एक वास्तविक अभिन्न अंग है। यहाँ कोई विरोधाभास नहीं है।

लेकिन जब हम चले जाते हैं, तो हमारी आत्मा का वह शाश्वत तत्व चला जाता है, और शरीर खराब होने के लिए पीछे रह जाता है। और पुनरुत्थान में, एक नया शरीर। पद 43 में कमज़ोरी से शक्ति तक एक नई ताकत।

यह महिमा में जी उठता है और निर्बलता में बोया जाता है और सामर्थ्य में जी उठता है। यह एक स्वाभाविक देह के रूप में बोया जाता है। यह एक आत्मिक देह के रूप में जी उठता है।

प्राकृतिक से आध्यात्मिक। एक प्राकृतिक शरीर उस क्षेत्र के अनुकूल होता है जिसमें हम रहते हैं। हम हवा में सांस लेते हैं।

जब हम भीगते हैं तो हमें भीगने का एहसास होता है। हम जीवित रहने के लिए खाते हैं। लेकिन आध्यात्मिक शरीर का मतलब यह नहीं है कि यह भूत और अलौकिक है।

मैं आपसे यह पूछना चाहता हूँ। क्या कोई देवदूत अंतरिक्ष में जगह लेता है? इसका उत्तर है, बिल्कुल। और हमारे पुनर्जीवित शरीर में, हम अंतरिक्ष में जगह लेंगे।

और यहां तक कि हमारी मृत्यु और हमारे पुनरुत्थान के बीच भी, हम अंतरिक्ष में एक जगह लेते हैं। हम मनुष्य बनाए गए हैं। और इस संबंध में, आध्यात्मिक का मतलब अलौकिक नहीं है।

आध्यात्मिक एक विशेषण है। यह एक नए प्रकार के शरीर का वर्णन करने के लिए एक विशेषण है जो एक नए डोमेन के लिए अनुकूलित है। यीशु के पास पुनर्जीवित शरीर था।

अगर आप चाहें तो कह सकते हैं कि उनके पास एक आध्यात्मिक शरीर था। वे बंद दरवाज़ों के पार भी प्रकट हो सकते थे। और फिर भी, थॉमस उन्हें शारीरिक रूप से छू सकता था और उन्हें महसूस कर सकता था।

वह मछली खा सकता था। और वह अदृश्य आदमी नहीं था। यह एक नया शरीर है जो एक नए क्षेत्र और एक नए डोमेन के लिए अनुकूलित है।

इसमें निरंतरता है, फिर भी इसमें असंततता है। यह एक अलग शरीर है। लेकिन पदार्थ एक ही है।

रूप का परिप्रेक्ष्य। इस तरह की बात को आप और कैसे और कितना शानदार तरीके से कह सकते हैं? यह हमारे अनुभव के दायरे से परे है। हमने पुनर्जीवित लोगों को घूमते हुए नहीं देखा है।

हमने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं देखा जिसका शरीर महिमामय हो। तो आप दुनिया में ऐसी किसी चीज़ की व्याख्या कैसे कर सकते हैं जिसे मानवता ने, यीशु को देखने वालों के अलावा, कभी देखा है? आप नहीं कर सकते। यह एक धार्मिक निर्माण होना चाहिए।

प्रकृति और प्रकृति की विशेषताओं को इस पुनर्जीवित शरीर के सादृश्य के रूप में प्रस्तुत करना कितना शानदार है। पॉल ने इसे ऐसे तरीके से प्रस्तुत किया है कि एक बच्चा भी इसे समझ सकता है और फिर भी इसमें स्पष्ट रूप से विश्वास का एक तत्व है। 44 से 49 में आदम और मसीह के बीच एक विरोधाभास है।

अगर कोई प्राकृतिक शरीर है, तो एक आध्यात्मिक शरीर भी है। 45, इसलिए लिखा है कि पहला मनुष्य, आदम, एक जीवित प्राणी बन गया। उत्पत्ति की पुस्तक में परमेश्वर ने मिट्टी की बोतल में जीवन की साँस फूँकी।

अंतिम आदम एक जीवन देने वाली आत्मा है। आध्यात्मिक पहले नहीं आया, बल्कि प्राकृतिक और उसके बाद आध्यात्मिक आया। हमें वही बनना होगा जो हम हैं, तभी हम कुछ और बन सकते हैं।

हमें पुनर्जीवित शरीर पाने से पहले एक प्राकृतिक शरीर होना चाहिए। पहला मनुष्य धरती की मिट्टी से बना था। दूसरा मसीह को स्वर्ग का बताता है।

जैसा कि सांसारिक मनुष्य था, वैसे ही वे लोग हैं जो पृथ्वी पर हैं। और जैसे स्वर्गीय मनुष्य है, वैसे ही वे लोग हैं जो स्वर्ग के हैं। तो, आपके पास आदम है और आपके पास मसीह की तुलना है।

आदम के पास सांसारिक शरीर था, मसीह के पास पुनर्जीवित शरीर था, और जो लोग मरेंगे उनके पास भी उसके जैसा पुनर्जीवित शरीर होगा। और जैसे हमने सांसारिक की छवि धारण की है, वैसे ही हम स्वर्गीय मनुष्य की छवि धारण करेंगे। हमारे पास मसीह के समान पुनर्जीवित शरीर होगा।

लेकिन हम कभी भी ईश्वर के अर्थ में मसीह की तरह नहीं हो सकते। हम हमेशा के लिए उद्धार पाए हुए, पुनर्जीवित मनुष्य ही रहेंगे। ठीक वैसे ही जैसे स्वर्गदूत हमेशा वही रहेंगे जो वे हैं।

हम कभी भी ईश्वरीय सत्ता से नहीं जुड़ेंगे। हम अनंत काल तक ईश्वरीय सत्ता नहीं रहेंगे। हम मनुष्य ही रहेंगे, हम काम करेंगे और आगे बढ़ते रहेंगे।

क्या आपने कभी खुद से पूछा है कि अनंत काल में यह कैसा होगा? क्या आपने कभी खुद से यह पूछा है? आप अनंत काल में क्या करने जा रहे हैं? खैर, मैं दक्षिण से हूँ, आप जानते हैं, तो अनंत काल में, क्या मैं एक छोटे से देश की दुकान के बाहर बैठकर आरसी कोला और मून पाई लूँगा? आप इसे तभी समझ पाएँगे जब आप दक्षिणी अमेरिका से हों और बेंजो चुनें। क्या मैं अनंत काल तक यही करने जा रहा हूँ? या शायद आप एक गोल्फ खिलाड़ी हैं। क्या आप अनंत काल तक गोल्फ खेलने जा रहे हैं? आप अनंत काल तक क्या करने जा रहे हैं? आप क्या करने जा रहे हैं? मेरा मतलब है, अनंत काल कितना लंबा है? मेरा मतलब है, हम इस शब्द का उपयोग इसलिए करते हैं क्योंकि हम वास्तव में इसका वर्णन नहीं कर सकते।

मेरा मतलब है, यह हमेशा के लिए है। क्या आप जानते हैं कि एक महिमामय शरीर में एक इंसान के रूप में, आप अनंत काल तक क्या करने जा रहे हैं? आप अनंत काल तक स्कूल जाने वाले हैं। अब, आप में से कुछ, याद रखें कि आप अपना उद्धार नहीं छोड़ सकते।

तो, मैं जो कह रहा हूँ उसके आधार पर आप अभी इसे छोड़ नहीं सकते। अनंत काल तक आप क्या करने जा रहे हैं? अनंत काल महिमावान मनुष्यों के लिए एक शाश्वत सीखने की प्रक्रिया है - ईश्वर के बारे में एक शाश्वत सीखने की प्रक्रिया।

आप ईश्वर के ज्ञान से कभी थकेंगे नहीं या उसके बराबर नहीं बनेंगे। हर दिन, आप ईश्वरीय सत्ता के बारे में कुछ नया सीखेंगे। अनंत काल ईश्वर के बारे में हमारी एक शाश्वत सीखने की परियोजना है।

मुझे सवालों के जवाब मिल रहे हैं। मैं पहले हज़ार साल यीशु के जीवन के वीडियो देखकर बिताने जा रहा हूँ। बस मज़ाक कर रहा हूँ।

लेकिन मैं ऐसा करना और इसे ग्रीक और अरामी भाषा में सुनना पसंद करूँगा। शायद पूरी नौ गज की दूरी तय करनी पड़े। ठीक है, तो आप देखते हैं कि पुनर्जीवित शरीर के खालीपन को क्या भरता है? इसका उत्तर बाइबिल धर्मशास्त्र है।

और प्रेरित वे हैं जो इस बाइबिल धर्मशास्त्र को विकसित कर रहे हैं। इस मुद्दे की सबसे विस्तृत व्याख्या हमारे पास 1 कुरिन्थियों 15 में है, जिसे सरल शब्दों में कहा गया है। अब, इस अध्याय के सभी शब्दों को खोलने के लिए बहुत सारी स्याही की ज़रूरत है।

लेकिन यह अध्याय एक ऐसी कहानी है जिसे पढ़ा जा सकता है और समझा जा सकता है। हमेशा इस बात में अंतर करें कि आप क्या समझ सकते हैं और क्या नहीं। मैं त्रिदेवों को समझ सकता हूँ।

क्योंकि मैं इस कथन को समझ सकता हूँ, मैं त्रित्व को नहीं समझ सकता। मैं पुनरुत्थान शरीर को समझ सकता हूँ।

लेकिन मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि इसका क्या मतलब है। यह मेरी सीख और अनुभव का हिस्सा नहीं है। समझना और समझना दो बिल्कुल अलग-अलग चीज़ें हैं।

और बाइबल हमसे अपेक्षा करती है कि हम इन कथनों को समझें। लेकिन उन कथनों को समझने के लिए हमें अंतिम समय तक प्रतीक्षा करनी होगी। इसलिए, रचनात्मक और ऐतिहासिक पैटर्न भविष्य की आशा की मांग करता है।

यह सिर्फ़ अभी की बात नहीं है। बल्कि यह भविष्य की बात है। ईसाई जीवन का हर पहलू इस तथ्य से बंधा हुआ है कि भविष्य है।

टेलीओलोजी एक ऐसा शब्द है जिसका हम अक्सर इस्तेमाल करते हैं। इसका एक उद्देश्य है। एक दिन है जब हमें भगवान को जवाब देना होगा।

एक अनंत काल है जिसमें हम परमेश्वर की उपस्थिति में अपने उद्धार को जीएँगे। जो लोग परमेश्वर को नहीं जानते, उनके लिए भी एक अनंत काल है। और यह एक और मुद्दा है जिसका उत्तर आपको देना होगा।

आप इसके बारे में इन विशेष नोट्स के अंतिम आधे भाग में पढ़ सकते हैं, जिसके बारे में हम बात भी नहीं करेंगे क्योंकि इन नोट्स का अंतिम आधा भाग अंतिम निर्णय से संबंधित है, जो बाइबिल धर्मशास्त्र का एक पहलू है। इसे संबोधित किया गया है, और हम इसके बारे में बहुत बात नहीं करेंगे, 1 कुरिन्थियों 15 के अंतिम भाग में जहाँ यीशु अपना राज्य लेता है और उसे पिता को

सौंपता है। और उस पर, पृथ्वी का इतिहास समाप्त हो जाता है, और परमेश्वर अनंत काल की शुरुआत करता है, और इसके अर्थ के बारे में निर्माण हैं।

मैं व्यक्तिगत रूप से सोचता हूँ कि हम आग या किसी और चीज़ से पुनर्जीवित पृथ्वी देखेंगे और मनुष्य की शाश्वत स्थिति इस पृथ्वी से जुड़ी हुई है जिसे भगवान ने बनाया है। लेकिन ये सब रचनात्मक निर्माण हैं। आपको अब तक समझ जाना चाहिए कि इसका क्या मतलब है क्योंकि हमारे पास इसके बारे में बताने वाले केवल कुछ अंश हैं।

पृथ्वी को नष्ट करने का अर्थ यह नहीं है कि उसे खत्म कर दिया गया है, बल्कि इसे आग से फिर से नया बनाया गया है और यह छुड़ाए गए लोगों का शाश्वत निवास बन गया है। खैर, यह धर्मशास्त्र है। मैं सिर्फ बाइबल से निपट रहा हूँ, है न? ठीक है।

अब, ध्यान दें कि पहले प्रश्न का उत्तर दिया गया है, और उत्तर काफी संक्षिप्त है। श्लोक 50 से 58. पहला प्रश्न था कि कैसे।

हमने इस बारे में बात की है कि किस तरह का शरीर। अब आइए इस सवाल का जवाब दें कि मरे हुए कैसे जी उठते हैं। आयत 50 देखें। मैं आपको बताता हूँ, भाइयों और बहनों, कि मांस और खून परमेश्वर के राज्य का वारिस नहीं हो सकते।

ध्यान दें कि इसे मांस और रक्त कहा जाता है। आप देखिए, जो हमें नश्वर बनाता है वह हमारा हृदय है, जो हमारे शरीर में रक्त पंप करता है और ऊतकों को जीवित रखता है। हृदय रुक जाता है।

खून रुक जाता है। ऊतक मर जाते हैं। हम मर जाते हैं।

लेकिन यह शरीर ही वह सब नहीं है जो हम हैं। हमारे पास एक शाश्वत आत्मा है जो भौतिक पदार्थ है। यह एक दार्शनिक दावा है।

वह अनंत काल तक नए शरीर में रहेगा, जिसका वर्णन कभी भी सादृश्य के अलावा किसी और तरीके से नहीं किया गया है, जैसा कि हमने देखा है। मैं तुम्हें बताता हूँ कि मांस और खून परमेश्वर के राज्य का वारिस नहीं होते, न ही नाशवान अविनाशी का वारिस होता है। सुनो, मैं तुम्हें श्लोक 51 में एक रहस्य बताता हूँ।

मैं यहाँ ग्रीक पाठ पर अपनी दोहरी राय देना चाहता था। इस रहस्य को उजागर करने वाला एक रहस्य, पवित्र रहस्य जो अब तक छिपा हुआ था, लेकिन अब उजागर हो गया है। एक आकर्षक छोटा वाक्यांश जो याद रखना आसान है और एक परिभाषा है।

एक पवित्र रहस्य जो अब तक छिपा हुआ था, लेकिन अब उजागर हो गया है। मैं तुम्हें एक रहस्य बताता हूँ। अब अध्याय 14 के अंत में वापस जाओ।

यदि आप यह विश्वास नहीं करते कि प्रेरित के शब्द परमेश्वर के शब्द हैं, तो किसी भी तरह की बातचीत का कोई आधार नहीं है। यह शास्त्र का अधिकार है। हम सभी सो नहीं जाएँगे, लेकिन हम सभी बदल जाएँगे।

आप देखिए, हम पुनरुत्थान से आते हैं, और वह पुनरुत्थान हमें बदल देता है। एक और पूरी बातचीत है जिसके बारे में हम नहीं बताएँगे जिसे हम मृत्यु और अंतिम पुनरुत्थान के बीच की मध्यवर्ती अवस्था कहते हैं। आप प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पढ़ सकते हैं और उसमें से कुछ देख सकते हैं।

सिंहासन के चारों ओर लोग, विश्वासी एकत्रित हैं। और वे भौतिक पदार्थ हैं जिन्हें अंतरिक्ष में जगह लेनी चाहिए क्योंकि उनका उल्लेख किया गया है। वे अपनी कब्रों में सोए हुए नहीं हैं, हालाँकि उनका शरीर वहाँ है और अभी तक भविष्य के पुनर्जीवित शरीर का रूप नहीं लिया है।

यदि आप उस पर आगे बढ़ना चाहते हैं तो आपको मध्यवर्ती अवस्था का अध्ययन करना होगा। लेकिन हम सभी बदल जाएँगे। लोग इस श्लोक का उपयोग करते हैं और इसे नर्सरी की दीवारों पर लटकाते हैं।

हम सब सो नहीं जाएँगे, लेकिन हम सब बदल जाएँगे। यह प्यारा है, लेकिन कम से कम यह इस संदर्भ का दुरुपयोग है। एक पल में, पलक झपकते ही, आखिरी तुरही बजने पर, क्योंकि तुरही बजेगी, मरे हुए लोग अविनाशी रूप में जी उठेंगे, और हम बदल जाएँगे।

यह मसीह के दूसरे आगमन का अंतिम पुनरुत्थान है। क्योंकि नाशवान को अविनाशी को और नश्वर को अमरता को धारण करना होगा। जब नाशवान को अविनाशी को और नश्वर को अमरता को धारण कर लिया जाएगा, तब जो कहा गया है वह सच हो जाएगा।

मृत्यु को जीत ने निगल लिया है। हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ है? क्षमा करें। हे मृत्यु, तेरी जीत कहाँ है? हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ है? मृत्यु का डंक पाप है।

अब समझिए। मौत का डंक पाप है। देखिए, रोमियों में, मेरा मानना है कि यह अध्याय 5 है, पॉल का तर्क है कि आदम के समय से लेकर मूसा तक पाप का राज रहा। उसका पूरा तर्क इस तथ्य पर आधारित है कि लोग मर गए।

मृत्यु आदम के पाप का परिणाम है, जिसे बगीचे से बाहर निकाल दिया गया था। यहाँ, हम धर्मग्रंथों की उस महान कथा पर वापस आते हैं जो हमें ईडन गार्डन और उत्पत्ति के शुरुआती अध्यायों के पूरे विचार को सामने लाने के लिए कहती है। हे मृत्यु, तुम्हारा डंक कहाँ है? तुम्हारी जीत कहाँ है? मृत्यु, तुम्हारा डंक कहाँ है? मृत्यु का डंक पाप है और पाप की शक्ति व्यवस्था है, लेकिन परमेश्वर का धन्यवाद हो कि वह हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से जीत देता है।

मृत्यु बाइबिल की कथा की सच्चाई का सबूत है। लेकिन यह अंत नहीं है। हम मरते हैं, हम पुनर्जीवित होंगे।

हे मेरे भाइयो और बहनो, किसी भी बात से विचलित न हो। दृढ़ रहो। हमेशा प्रभु के काम में पूरी तरह से समर्पित रहो क्योंकि तुम जानते हो कि प्रभु में तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं है।

हम जानते हैं कि चूँकि हमने भविष्य के पुनरुत्थान के दावे के लिए खुद को प्रतिबद्ध किया है, इसलिए हम इसे एस्कैटन, यानी अंतिम समय कहते हैं। एस्कैटोलॉजी अंतिम चीजों, अंतिम समय और अंतिम समय का अध्ययन है। बाइबल एक उद्देश्य है।

यह हमेशा भविष्य की ओर देखता है। मुझे परवाह नहीं कि आप बाइबल में कहां हैं, यह भविष्य की ओर देखता है। और भविष्य वर्तमान के लिए प्रेरणा बन जाता है।

हम काँपते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि हमें परमेश्वर को जवाब देना है। विश्वासी होने के बावजूद, हमें परमेश्वर को जवाब देना होगा। हमें यह नहीं बताया गया है कि इसका क्या मतलब है।

किसी ने कहा है कि जो कोई भी यीशु मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में जानता है, वह स्वर्ग में जाएगा। कुछ के पास चाय का प्याला होगा, और कुछ के पास भरने के लिए गैलन की बाल्टी होगी। हम सभी के पास भरे हुए प्याले, चाय के प्याले और गैलन की बाल्टी होगी।

यह सिर्फ उस चीज़ का वर्णन करने का प्रयास है जिसका वर्णन बाइबल कभी नहीं करती। बाइबल कभी भी उस शाश्वत अवस्था के बारे में हमारी जिज्ञासा को संबोधित नहीं करती। आप जो सबसे नज़दीकी पा सकते हैं, वह वही है जो हमने इस अध्याय में पुनरुत्थान शरीर के बारे में पढ़ा है।

आप इसके सबसे करीब कभी नहीं पहुंच सकते। आपको इसे स्वीकार करना होगा। और आप इसका विश्लेषण नहीं कर सकते।

यह एक खूबसूरत फूल की तरह है, जैसा कि पॉल ने यहाँ वर्णन किया है। यह एक खूबसूरत फूल की तरह है। अगर आप इसे तोड़ेंगे, तो यह मरना शुरू हो जाएगा।

आप इसकी पंखुड़ियाँ तोड़ना शुरू कर देते हैं, और फिर यह निश्चित रूप से मर जाएगा। आपने इसे नष्ट कर दिया है। हम व्याख्या कर सकते हैं, और आप यहाँ मौजूद चीज़ों को खोलने वाली टिप्पणियों के सैकड़ों पृष्ठ पढ़ सकते हैं, और निश्चित रूप से कुछ अन्य वाक्यांश हैं जिन पर हम जा सकते हैं, लेकिन दिन के अंत में, इस पाठ का सावधानीपूर्वक और बारीकी से पढ़ना हमें सादृश्य द्वारा बता रहा है कि भविष्य क्या होने वाला है।

यह आपके सभी सवालों का जवाब नहीं दे रहा है। हमें नहीं पता कि आपके पालतू जानवर स्वर्ग में जाएँगे या नहीं। वहाँ बैजो होंगे।

मैं आपको इसकी गारंटी देता हूँ। वहाँ बैजो होंगे। वास्तव में, मेरे अच्छे दोस्तों में से एक, माइकल व्हिटमर, जो धर्मशास्त्र के प्रोफेसर हैं, अनन्त राज्य में मेरे पैरों के पास बैठकर बैजो की शिक्षा लेंगे।

मेरे पुराने नियम के सहकर्मियों में से एक जॉन लॉयर भी वहाँ आने वाले हैं। और मेरे कुछ छात्रों ने मेरे बैजो के कारण मेरा मज़ाक उड़ाया। वे वहाँ अनंत काल में बैजो सेमिनार 101 लेने जा रहे हैं।

मैं बस आपको चिढ़ा रहा हूँ। हमारे पास इस बारे में कई तरह की कल्पनाएँ हैं, लेकिन क्या यह दिलचस्प नहीं है, मेरे दोस्तों? बाइबल इस बारे में आपकी जिज्ञासाओं को संबोधित नहीं करती है। यह इसकी पुष्टि करती है।

यह इस बात पर जोर देता है। यह इसे एक प्रेरक शक्ति के रूप में उपयोग करता है। लेकिन बाइबल वास्तव में जिस बात से चिंतित है, वह है क्रूस के बारे में आपकी समझ, और सुसमाचार का आपका प्रचार, और बाइबल द्वारा सिखाई गई नैतिकता के अनुसार आपका जीवन जीना।

बाइबल इसी बात पर जोर देती है। आप और भी बहुत सी चीज़ों के पीछे पड़े हैं। बेशक, इंसान जिज्ञासु होते हैं।

हम चाहते हैं कि हमारी जिज्ञासाओं का समाधान हो, लेकिन परमेश्वर को इसकी चिंता नहीं है। उसने आपको प्रेरित करने के लिए बस इतना ही बताया है, और बात यहीं खत्म हो जाती है। इसे सहन करें और सुसमाचार में व्यस्त हो जाएँ।

वैसे, मैं अभी इस बारे में नहीं बता सकता, लेकिन मेरे दोस्तों, सुसमाचार में यीशु के आने के वादे से लेकर उसके दूसरी बार वापस आने के दिन तक सब कुछ शामिल है। यह सब सुसमाचार के रूप में वर्णित है। रोमियों की पुस्तक पढ़ें।

पौलुस ने कहा, "मैं तुम्हें सुसमाचार सुनाने के लिए लालायित हूँ। और रोमियों की पुस्तक में इसके बारे में सब कुछ है। यही सुसमाचार है।"

यह सिर्फ़ मसीह की मृत्यु, दफ़न और पुनरुत्थान नहीं है। यह सुसमाचार का हिस्सा है। लेकिन सुसमाचार मसीहाई हर चीज़ के बारे में एक बड़ी कहानी है। उसमें व्यस्त हो जाओ, और उसे खोलो। खैर, यह एक रहस्य है। यह ईश्वर का कार्य है।

यह पुनरुत्थान के लिए एक तार्किक आवश्यकता है। मैंने यहाँ एक और पाठ उद्धृत किया है जिसे आप पढ़ सकते हैं। खैर, मैं आपको कुछ और नोट्स देना चाहता हूँ, हालाँकि, मैं उन पर विस्तार से चर्चा नहीं करने जा रहा हूँ।

मेरे एक अच्छे मित्र डेविड टर्नर हैं, जो मैथ्यू कमेंट्री और बेकर एक्सजेक्टिकल कमेंट्री सीरीज के लेखक हैं, और कुछ अन्य पुस्तकें और बहुत सारे लेख भी लिखते हैं। डेविड एक बेहतरीन न्यू टेस्टामेंट विद्वान हैं। शिक्षण में, उनकी एक कक्षा मैथ्यू पर हो सकती है, लेकिन मुझे यकीन नहीं है; उन्होंने और कक्षा ने अंतिम निर्णय के प्रश्न पर एक प्रोजेक्ट किया।

उन्होंने इसके परिणाम मेरे साथ साझा किए, और मैंने इसे आपके अध्ययन के लिए यहाँ विस्तार से दिया है। और आपके पास सभी ग्रंथों की एक श्रृंखला है जो वे अंतिम निर्णय के बारे में नए

नियम के फोकस में सामने ला सकते हैं, केवल ग्रंथ ही। टर्नर ने फिर सभी प्रमुख स्वीकारोक्ति के कथन जोड़े।

मुझे यकीन नहीं है कि वे निश्चित रूप से उनमें से सभी नहीं हैं, लेकिन यह प्रमुख स्वीकारोक्ति है जो उसके संदर्भ में थी जब उसने ऐसा किया था, जो एक बैपटिस्ट संस्थान में था। यह एक बहुत ही दिलचस्प अध्ययन है जो अंतिम निर्णय के मुद्दे का जवाब देता है। और फिर पृष्ठ पर, मुझे लगता है कि यह मैं भूल गया, यह लगभग 229 है नहीं, उससे आगे बढ़ें।

मैंने इसे अपने दूसरे नोट्स में लिख लिया था, और फिर मैंने कुछ चीजें जोड़ीं और पेजिनेशन बदला। यह लगभग सबसे आखिरी तक जाता है। यह 237 है।

पृष्ठ 237 पर, हमने अंतिम निर्णय के बाइबिल सिद्धांत के निहितार्थों पर चिंतन की एक श्रृंखला दी है। मैं बस उन्हें उजागर करना चाहता हूँ। मैं उन्हें आपको पढ़कर नहीं सुनाऊँगा।

सबसे पहले, जब आप उन सभी ग्रंथों और चर्च के इतिहास और उसके सैद्धांतिक कथनों का अध्ययन करते हैं, तो आप इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि नरक उन लोगों के लिए एक वास्तविक और चिरस्थायी अनुभव है जिन्होंने परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया है। यह एक कठोर सत्य है, लेकिन बाइबल पर विश्वास करने के लिए इसकी आवश्यकता है। अगला, पृष्ठ 238 पर, पवित्रशास्त्र यह नहीं सिखाता है कि स्वर्ग और नरक का अनुभव हमारे वर्तमान जीवन के दौरान पृथ्वी पर किया जाता है।

वे परलोक विद्या का एक हिस्सा हैं। तीसरी बात यह है कि ईश्वर अपने सबसे पूर्ण और सबसे गहरे अर्थ में प्रेम है। ईश्वर कई अन्य चीजें भी हैं।

वास्तव में, कक्षा में, जब आप समझते हैं कि परमेश्वर के प्रेम का क्या अर्थ है, तो आप समझते हैं कि यह परमेश्वर की भावना का कथन नहीं है। यह परमेश्वर की वाचा की वफ़ादारी का कथन है, और इस अर्थ में, परमेश्वर प्रेम है। अगला बुलेट, हमारे पाप और पापपूर्ण तरीकों ने परमेश्वर को बहुत नाराज़ किया है, और फिर भी वह इसके बावजूद दयालु है।

मसीह के माध्यम से परमेश्वर का मेलमिलाप तभी प्रभावी होता है जब इसे व्यक्तियों द्वारा अपनाया जाता है। आपको इस पर विश्वास करना चाहिए। आपको मसीह को स्वीकार करना चाहिए।

इसके अलावा, पवित्रशास्त्र में इस बात का कोई सबूत नहीं है कि नरक में कोई छंटाई या सुधार करने वाला प्रभाव होता है। वहाँ कोई शोधन-स्थल नहीं है। वहाँ कोई शाश्वत नींद नहीं है।

चर्च के विश्वास में मौजूद साक्ष्य के अनुसार, कोई विनाशवाद नहीं है। हाल के वर्षों में, यहां तक कि इंजीलवाद में भी इस पर बहुत बहस हुई है। हालांकि, आधुनिक समय में पाठ और सिद्धांत संबंधी कथन निश्चित रूप से उस दृष्टिकोण को मानते हैं।

इसके अलावा, मनुष्य को उनके द्वारा प्राप्त रहस्योद्घाटन के लिए जवाबदेह ठहराया जाएगा, चाहे वह उनके लिए कुछ भी हो। इसके अलावा, ईसाई मिशन का लक्ष्य मसीह के माध्यम से उद्धार की ईश्वर की बुद्धिमान योजना को स्वीकार्य बनाना नहीं है। इसका उद्देश्य इसकी घोषणा करना है।

238 के अंत में, अंतिम निर्णय की वास्तविकता और परमेश्वर के प्रति हमारी जवाबदेही हमें आश्चर्य करती है कि हमें अनुग्रह के साधनों पर अधिक ईमानदारी से ध्यान देना चाहिए जो उसने हमारे विकास और घोषणा के संदेश के लिए प्रदान किए हैं। इसलिए, अंतिम निर्णय की इस बात को नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए। हम अपने वर्तमान स्वादिष्ट संस्कृति में न्याय, अंतिम निर्णय के बारे में बहुत कम उपदेश सुनते हैं।

लेकिन यह आ रहा है। या तो हमारी मृत्यु के संदर्भ में या युग के अंत में अंतिम समय की शुरुआत के संदर्भ में, जो भी हम में से किसी के लिए पहले आए। इसलिए, हमें सूची बनाने और इस सवाल का जवाब देने की ज़रूरत है, आप यीशु के साथ क्या करेंगे? तटस्थ, आप नहीं हो सकते।

किसी दिन, आप पूछेंगे, वह मेरे साथ क्या करेगा? यह जीवन आपके लिए उस प्रश्न का उत्तर देने का अवसर है। जैसा कि किसी ने कहा, जैसे मृत्यु आपको पाती है, वैसे ही अनंत काल आपको बांधता है। आपके पास मसीह, उसकी मृत्यु, दफन, पुनरुत्थान और उसके फिर से आने के वादे के पक्ष में या उसके खिलाफ अपना निर्णय लेने के लिए यह जीवन है।

और सभी मनुष्यों का पुनरुत्थान, कुछ को जीवन और कुछ को अनंत मृत्यु। यह आपका चुनाव है। और यह एक गंभीर चुनाव है।

हाँ, यह एक ईसाई विकल्प है। यह वास्तव में एक यहूदी-ईसाई विकल्प है, पुराने नियम के कारण। और आप कह सकते हैं, मैं बाइबल पर विश्वास नहीं करता, जिसे एक स्वायत्त मनुष्य के रूप में, आपको कहने का अवसर है।

लेकिन मैं आपको सिर्फ यह सलाह देना चाहूँगा कि आप अपने फैसले पर मुहर लगाने से पहले पवित्र शास्त्र और मसीह और पॉल तथा कई अन्य लोगों के जीवन का जायज़ा लें। क्योंकि जब तक आप मर नहीं जाते, आपके पास एकमात्र जीवित परमेश्वर और उसके पुत्र, यीशु मसीह की ओर मुड़ने का हर अवसर है। और मैं प्रार्थना करता हूँ कि आपने ऐसा किया है या आप ऐसा करेंगे। यीशु के नाम में, आमीन।

यह डॉ. गैरी मीडर्स की 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह व्याख्यान संख्या 32, 1 कुरिन्थियों 15 है, जो पॉल द्वारा मृत्यु के बाद के जीवन और पुनरुत्थान से संबंधित प्रश्नों का उत्तर है।